OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 2

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-5 जून-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

सम्बन्धों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाकर करें खुशी का इज़हार

अजमेर। 'खुशनुमा संबंधों की चाबी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर विराजमान ब्र.कु. शांता तथा ब्र.कु. शिवानी। सुनने आये शहर के प्रबुद्ध जन।

अजमेर। सम्बन्धों में खुशी के लिए हमें 'सिर्फ मेरी सोच ही सही है' यह अवधारणा छोड़ हर एक को सही समझ, आपसी सम्बन्धों में स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। स्वतंत्र दृष्टिकोण के लिए याद रखें कि हर आत्मा अपनी-अपनी लम्बी यात्रा पर है।

उक्त उद्गार राजयोगिनी ब्र.कु. शान्ता के निर्देशन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'खुशनुमा सम्बन्धों की चाबी', 'अपेक्षाओं से स्वीकृति तक' और संतुलित जीवन' विषयों पर आयोजित त्रिदिवसीय सत्र में ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमें अपना पार्ट बेस्ट बजाना है, सिर्फ इस पर ध्यान देना है। सम्बन्धों में अध्यात्म को अपनाकर हम सच्ची खुशी का आदान-प्रदान सहज रीति से कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि आज हमें अपेक्षायें रखने के बजाय एक दूसरे को मूल स्वरूप में स्वीकार करने की ज़रूरत है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि आज अभिभावकगण अपने बच्चों से अपेक्षायें अधिक रखते हैं और उन्हें स्वीकारते कम हैं जिस कारण सम्बन्धों में दूरी बढ़ रही है, आज आवश्यकता है नि:स्वार्थ प्रेम और आत्मीय सम्मान से उन्हें सही राह दिखाने की। उन्होंने आगे बताया कि कई बार हम महसूस करते हैं कि इस वर्तमान जीवन में अच्छे कर्म करते भी हमें आशान्वित फल की अनुभूति नहीं होती है इसके लिए हम याद रखें कि वर्तमान जीवन के कर्मों की बैलेंस शीट में पूर्व जन्मों के नकारात्मक कर्मों का बकाया भी साथ आया है। इस जन्म में सत्कर्मों की अधिकता से जब वह बकाया चुक्तू होगा तो हमें अच्छे फल की प्राप्ति होने लगेगी। परन्तु तब तक के लिए हमें धैर्यता और शान्ति के साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार अपने मंसा संकल्पों, वाणी और कर्मों द्वारा करते जाना है।

- खुशी जीवन यात्रा का पड़ाव नहीं बल्कि यात्रा को बेहतर बनाने का तरीका।
- व्यवहार में आध्यात्मिक पुट दे कर करें खुशी का इज़हार।

उन्होंने राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास द्वारा जनसमुदाय को शान्ति एवं आनंद का अनुभव भी कराया। अन्त में उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक ज्ञान के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था 140 देशों में 8000 से अधिक सेवाकेन्द्रों के द्वारा राजयोग की शिक्षा प्रदान कर रही है। अजमेर शहर में अलग-अलग स्थानों पर सात सेवाकेन्द्र हैं जहाँ नि:शुल्क आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग मेडिटेशन का लाभ लिया जा सकता है। इसी के फलस्वरूप प्रोग्राम के पश्चात् सेवाकेन्द्रों पर त्रिदिवसीय शिविर में कई आत्माएँ ज्ञान लाभ लेने हेतु आ रही हैं।

सामाजिक सशक्तिकरण में कला व संस्कृति का अहम् योगदान

''स्वर्णिम विश्व में कलाकारों का योगदान'' पर चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन। भारत तथा चीन के कलाकारों ने दी मनभावक प्रस्तुतियां

ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा ज्ञानसरोवर परिसर में ''स्वर्णिम विश्व में कलाकारों का योगदान'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रमुख वक्ताओं ने कला व संस्कृति को सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बनाने का आहवान करते हुए कहा कि कला व संस्कृति के बिना समाज निष्प्राण हो जायेगा। देश को जोड़ने में कलाकारों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए वक्ताओं ने कहा कि कला व संस्कृति को शाश्वत बनाने के लिए कलाकारों के जीवन में पारदर्शिता, पवित्रता व मेडिटेशन का समावेश होना आवश्यक है।

कुमारी वैशाली अपने भाई के साथ गणेश वंदना का नृत्य प्रस्तुत करते हुए।

सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए दीप प्रज्जवलित करने वालों में मुख्य अतिथि गुजरात प्रदेश कांग्रेस की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष दिनेश कुमार पटेल, 19 भाषाओं में गायन के आधार पर ख्याति अर्जित कर चुकीं एस. जानकी बैंगलोर, हरियाणा के कवि रूपनारायण चानना, मुम्बई से आए फिल्म व टी.वी.निदेशक संदीप गुप्ता, बैंगलोर की फिल्म व टी.वी. कलाकार रेखा राव, 2007 में मि.इंडिया चुने गये भारत कुन्द्रा, निफा संस्था के अध्यक्ष प्रितपाल सिंह पन्नु के अलावा ब्रह्माकुमारी संस्था में कला व संस्कृति प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय तथा ज्ञानसरोवर की निदेशिका डॉ.निर्मला शामिल थे। इससे पूर्व स्वागत

शेष पेज 8 पर...

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दिनेश कुमार पटेल, एस. जानकी, रूपनारायण चानना, संदीप गुप्ता, रेखा राव, भारत कुन्द्रा, प्रितपाल सिंह पन्नु, ब्र.कु. रमेश शाह, ब्र.कु. मृत्युंजय तथा ब्र.कु. डॉ. निर्मला।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 3

मादरे जहान मम्मा...

एक गीत के बोल हैं : उसको नहीं देखा हमने कभी, पर उसकी ज़रूरत क्या होगी, ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी। बात भक्ति और भावना जैसी तो है, पर वह परम अस्तित्व परमात्मा, आप समान या ईश्वर के समान बनने का अवसर भी तो उन्हीं गुणों और शक्तियों को भरकर देता है, जो स्वयं उसके भी हैं। इन्हीं से तो पहचान होती है कि आत्मा कितनी निर्विकारी हुई है और उस रूपांतरण की स्थिति कैसी है। यह सभी कुछ उसके व्यवहार से प्रकट होता है। पारखी इसी परिवर्तन को समझकर अस्तित्व को पहचानता है और गुण तथा शक्तियों में विभाजित परमात्मा भी इसी माध्यम से प्रकट होता हुआ अनुभव में आता है। जिन्होंने ब्रह्मा बाबा को, मम्मा को देखा और अनुभव किया है, वे ही सम्भवत: इसकी पुष्टि कर सकते हैं। जिन्होंने नहीं देखा वे उन घटनाओं, प्रसंगों और विचार-रूपकों से इन सभी दृश्यों को इमर्ज कर उस अनुभूति से प्रेरित होते होंगे।

- ब्र.कु. गंगाधर

यज्ञ माता सरस्वती जिन्हें सभी आदर तथा स्नेह से 'मम्मा' कहते और मानते हैं, को याद करते हुए यही सब तो याद आता है। तभी तो गीत रचने वाला कह पाया -ऐ माँ तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी। यह देह का स्मरण है या परमात्मा को याद करते हुए सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा का स्मरण है -सोचें। सोचें इसलिए कि 24 जून 1965 के बाद जब मम्मा की हमें याद आती है या हम उनका स्मरण करते हैं तो उसका आशय और अर्थ क्या है। आशय, उन्हें एक 'रोल मॉडल' प्रेरक व्यक्तित्व की तरह याद करना ताकि हम उस स्थिति तथा ऊँचाई तक पहुंच सकें। अर्थ यह कि प्रवृत्ति की समस्याओं और संघर्षों में उसी तरह अचल और अडोल रह सकें, जैसे वे भी यज्ञ की संभाल करते हुए बनी रहीं। अर्थ यह भी कि उनकी निष्ठा, निश्चय और अभय को हम भी अपने में जांचें और पहचानें।

देहांतरित दादी प्रकाशमणि ने उन्हें याद करते हुए बताया था -'वे स्मृतिधर थीं'। प्यारे बाबा के एक महावाक्य के अनेक राज खोल देने वाली राजयुक्त। चातक पक्षी के समान ज्ञान-सागर की एक-एक बूंद की अनुरागी। वे संसार के हर दृश्य से उपराम थीं। वे चलती फिरती दिव्य परी थीं जिनका तन प्रकाश की रश्मियां प्रवाहित करता था। जादू की छड़ी की तरह, उनकी करुणा भरी दृष्टि जिस पर पड़ जाती, वह जन्म-जन्म की तपन, थकान और अज्ञान से मुक्ति पा जाता था। ऐसे अनेक गुणों तथा शक्तियों का व उनके साथ बिताये पलों की याद दिलाने वाले प्रसंगों का भंडार ब्रह्मा-वत्सों की स्मृति में है। पर उन कहानियों को हम समझ भी पायेंगे या सिर्फ उन्हें जानकारियों की तरह दोहराते ही रहेंगे। ब्र.कु.निर्वैर जी के शब्दों में यही बात इस तरह है -'परमात्मा को पहचानने के लिए दिव्य बुद्धि व दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है। इसी प्रकार, उनकी (प्रजापिता ब्रह्मा) मुख वंशावली बेटी सरस्वती को पहचानने के लिए भी दिव्य बुद्धि की निर्मलता की आवश्यकता है। उनका स्मरण कराती घटनाएं, प्रसंग तथा विचार प्रेरक तभी बन सकेंगे, जब उन्हें हम आध्यात्मिक अर्थों में समझ भी सकें।

उन्हें 'यज्ञ माता' स्वयं बाबा ने कहा और 'मम्मा' उन्हें यज्ञ के वत्सों ने स्वीकार किया। दादी निर्मलशांता ने उन्हें यह सम्बोधन अपनी पालना के दौरान दिया था, पर उनके पालना के यह गुण प्रेम, स्नेह, समझाने का तरीका, विकास की ललक यानी वे सभी व्यवहार तथा शिक्षाएं जो मातृत्व का अहसास कराती थीं, मम्मा के व्यवहार में स्पष्ट होती थी। उन्होंने इस यज्ञ के कठिन दिनों में जिस धैर्य और सूझबूझ से श्रीमत से बिना हटे निरंतर विकास किया, वह उनके असाधारण व्यक्तित्व का ही करिश्मा था। उनका हाँ-जी का पाठ और ज्ञान की समझ ऐसी स्पष्ट थी कि सब उन्हें अपने आगे ही पाते थे। ब्र.कु.जगदीश भाई ने उनके इसी गुण के सम्बन्ध में कहा है : वह दिव्य गुणों की खान थीं। वह मादर-ए-जहान (वर्ल्ड मदर) थीं। वह न होती तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनकर सभी यज्ञ वत्सों को समझाती थीं। वह तो उनके सामने ज्ञान और योग का नमूना थीं। सभी यज्ञ वत्सों को सम्भालने के लिए वही तो निमित्त थीं। दादी जानकी ने कराची की याद करते हुए बताया कि मम्मा ऑफिस में बैठी थीं तो मैंने जाकर पूछा-मम्मा हम क्या पुरुषार्थ करें? मम्मा ने कहा :सदैव समझो यह मेरी अंतिम घड़ी है और मुझे बाबा की याद में रहना है। ब्र.कु. करुणा ने कहा कि उनकी दृष्टि में पावनता थी और उनकी पालना व क्षमा का गुण गजब का था। जब हम मम्मा को याद करें तब यह भी याद रखें कि मम्मा, बाबा के वचन और व्यवहार को सामने रखती थीं। एक बार किसी ने मम्मा से पूछा, मम्मा पहले बाबा कहते थे कि जहां जीत, वहां जन्म। आज कल बाबा उसके बारे में कुछ बोलते नहीं। आपका क्या विचार है? मम्मा बोली -मेरा विचार कहां से आ गया? जो बाबा ने कहा है वही हम सबका विचार है। ऐसी निराभिमानी, त्यागी वैरागी और तपस्वी मम्मा की याद उस पुरुषार्थ की याद है जो बच्चों को परमात्मा समान बनाती है। हे जगदम्बा सरस्वती आपके स्मृति दिवस पर आपको शत् शत् नमन।

नष्टोमोहा रहने वाले ही सदा खुश

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

निश्चयबुद्धि से मायाजीत, नष्टोमोहा बनने वाले किसी के शरीर छोड़ने पर दु:खी नहीं होते। बाबा ने जो खुशी दी है उसकी बहुत वैल्यु है। ज्ञान मार्ग में एक-एक बात इतनी अच्छी, स्पष्ट मिली है इसलिए सदा राज़ी हैं, नाराज़ नहीं होते हैं। कोई ने कुछ कहा, किया अच्छा है। जो हर राज़ को समझकर खुश हो रहते हैं वह हेल्दी वेल्दी रहते हैं। माइन्ड से हेल्दी हैं तो शरीर भी हेल्दी है। जिसका माइन्ड हेल्दी नहीं है तो शरीर भी बिचारा...और शरीर कैसा भी हो पर माइन्ड अच्छा हो तो शरीर को अच्छा कर देता है। तो हेल्दी कैसे हुए? वेल्दी भी बहुत हैं ना, ज्ञान का खज़ाना है, इसलिए हैप्पी हैं। कभी दुनिया में कुछ भी हो जाये, विनाश आ जाये तो भी हम खुश होंगे।

जब से बाबा को साक्षात्कार हुआ विनाश का और विष्णु का, इस साक्षात्कार को 75 साल हो गया तो कईयों को संशय आता है, पता नहीं विनाश कब आयेगा! बाबा तो कहता है विनाश आया कि आया। अगर इतना समय न होता तो इतने बाबा के बच्चे कैसे पैदा होते, तो भगवान जानता है। नई दुनिया स्थापन करना और उसमें आने वाले बच्चों को लायक बनाके पालना देना, यह बाबा का ही पार्ट है। हम सब बाबा के बच्चे हैं, आत्मायें हैं तो भाई-भाई हैं, ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी हैं तो बहन भाई हैं। जब भी याद में बैठते हैं तो अंदर से यही दिखाई पड़ता है, सब आत्मायें हैं...पर ऐसी आत्मिक स्थिति हो जो मेरे को देखके वो भी अपने को आत्मा समझना शुरु कर दे। मेरा शरीर दिखाई न पड़े, इसके लिए अपना भी शरीर भूल जाये। अभिमान, देह-अभिमान को जिसने खत्म किया, वही राजाओं का राजा बनेगा। बाबा इसीलिए राजयोग द्वारा रॉयल्टी सिखा रहा है। कभी दिल में, मन में भूल से भी कोई संकल्प न आये यह मेरा है, मैं फलाना हूँ, मेरे पास यह मकान है, दुकान है...।

प्रैक्टिकली बाबा ने जो बोला है, सो किया कराया है तब प्रवृत्ति मार्ग वाले इतने बाबा के बच्चे निकले हैं। पहले समझते थे ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बनना माना घर छोड़ना, बाबा के पास आ करके बैठ जाना। आज बाबा ने कहा, कहाँ भी रहे वो, अगर 7 दिन का कोर्स अच्छा करे, मुरली रोज़ पढ़े और अमृतवेले अच्छा करे फिर बाबा की याद में खाना बनाके खाये, खिलाये। भोजन शुद्ध हो, एक-एक कणे-दाने का भी कदर हो, भावना से स्वीकार करे..तो बहुत आगे जा सकता है। बाबा जब हमें छोटे बच्चों के समान प्यार से मेरे मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, कल्प पहले वाले बच्चे कहता है तो हमको खींच होती है, बुद्धि देह की आकर्षणों, सम्बन्धों से न्यारी हो जाती है क्योंकि भगवान कहे मेरे मीठे बच्चे...यह कितनी बड़ी बात है! फिर मुरलियाँ सुनते हैं तो बाबा के लिए प्रेम बहुत है क्योंकि मुरली में जादू है, परिवर्तन होता है ना। माया ने बुद्धि का ताला बन्द कर दिया, कर्म अकर्म, विकर्म की गति भुला दी जिससे पता ही नहीं पड़ा यह क्या कर्म कर रहे हैं? विकारों वश थे लेकिन बाबा ने मुरली द्वारा अच्छी तरह से बुद्धि का ताला खोल दिया, तो बाबा से प्रेम बहुत हो गया।

दिल में दिलाराम को बिठायें तो दिल खुश रहेगा

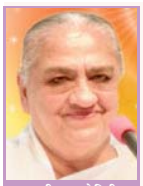

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा का साथ बहुत प्यारा है। एक बाबा शब्द में भी बहुत प्यार है। बाबा ने हम सबको इतना प्यार दिया है, इतनी मेहनत की है एक एक बच्चे के ऊपर जो बच्चा कभी भूल नहीं सकता है। बाबा ने जो प्यार दिया है हमको इतना अच्छा बनाया है वो कभी भूल सकता है? नहीं भूल सकता है, यही प्यार हमको दो युग बहुत आनंद और प्रेम दिलायेगा। लेकिन उसके पहले अभी जो बाबा चाहता है वो करना है, बस। जो बाबा ने मुरली में कहा वो करने से बाबा जो चाहता है वो चाहना पूरी होती है और हम भी बहुत खुश होते हैं। जब रात्रि को देखते हैं, जो बाबा ने कहा वही हमने सारा दिन किया है तो अपने ऊपर भी बहुत खुशी होती है। अगर नहीं करते हैं तो शक्ल थोड़ी बदलती है। लेकिन मधुबन में न चाहते हुए भी सबका योग लग जाता है क्योंकि वायब्रेशन ऐसा है, जो भी यहाँ आते हैं उन सभी के मन में मीठा बाबा, प्यारा बाबा, बाबा ही बाबा होता है। और बाबा जो मुरली चलाते हैं, वो मुरली हमारे लिये बहुत अच्छा साधन है, बाबा ने कहा और हमने सारा दिन किया। हर मुरली में चारो ही सबजेक्ट्स होते हैं, उन चारो सबजेक्ट्स को ध्यान में रख करके हम उसी प्रमाण अपने आपको चलायें तो बहुत इज़ी है, मेहनत नहीं है क्योंकि बाबा से प्यार तो हम सभी का है।

तो आप सभी मधुबन में आकर मधुबन से क्या गिफ्ट ले जायेंगे? वो गिफ्ट शॉल, साड़ी, चादर वगैरह यह तो कॉमन बात है। लेकिन कौन-सी गिफ्ट ले जायेंगे? अपने दिल में बाबा को समा के जाना, जो दिल से निकले ही नहीं। दिलाराम है ना। दिल में आराम कराने वाला है इसलिए जो भी यहाँ से जायें तो एक बात ज़रूर करना, जो भी आपकी कमी हो तो यहाँ से लेके नहीं जाना लेकिन बाबा के आगे दे करके जाना, अपने को मुक्त करके जाना क्योंकि यहाँ मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन का संग, मधुबन में बाबा की मुरली आपको मदद करेगी। अगर कोई भी ऐसी बात मन में हो तो लेके नहीं जाना, खाली दिल करके जाना। साफ दिल में बाबा को बिठाके जाना और बाकी जो दिल में ऐसी वैसी बातें हो ना, वो यहाँ छोड़के जाना। छोड़ना आता है ना? तो जो कमी कमज़ोरी वहाँ नहीं जा सकी, कोशिश तो वहाँ भी करते होंगे लेकिन यहाँ बाबा की डायरेक्ट दृष्टि है, बाबा का निवास है इसलिए यहाँ दृढ़ संकल्प करेंगे, तो सहज हो जायेगा। सिर्फ संकल्प नहीं करना - हो जायेगा, करता तो हूँ...नहीं, करना ही है इसको कहा जाता है दृढ़। तो ऐसे दृढ़ करके जायेंगे तो आपको मधुबन का वायुमण्डल भी मदद देगा। यहाँ बगीचे और वृक्ष बहुत हैं, तो वृक्ष के नीचे अगर कुछ रह गया हो तो उसको छोड़के जाना, लेके नहीं जाना क्योंकि वैसे भी कहीं यात्रा पर या ऐसे शुभ कार्य के स्थान पर जाते हैं तो कुछ न कुछ छोड़के ही आते हैं। तो यह मधुबन तो बाबा का घर है, आपका भी घर है लेकिन यह घर ऐसा है जो सम्पन्न बना देता है। इसीलिए यहाँ वरदान मिलेगा, अगर आपने दिल से यहाँ कोई भी ऐसी बात छोड़ी, तो जब भी आप मधुबन याद करेंगे तो वो चीज़ छोड़ने में यह मदद करेगा, क्योंकि यहाँ बाबा का वायुमण्डल है, जो भी आते हैं सभी में शुभ भावना होती है इसलिए वह मदद आपको बहुत मदद करेगी, तो कुछ भी ऐसा लेके नहीं जाना, जो छोड़ने की चीज़ है वह यहाँ ही छोड़के जाना। अंश मात्र भी लेके नहीं जाना। बाबा को दे दी, मधुबन में छोड़के गये तो फिर वापस कैसे लेंगे? तो बाबा, जो मेरे बच्चे कहके बहुत महिमा करता है वही रूप यहाँ अनुभव करके वहाँ जाना। सहज है ना? जो भी गलती है या कोई संस्कार है, वह छोड़ना मुश्किल तो नहीं लगता? यहाँ बाबा की और ब्राह्मणों की मदद है, कितना वायुमण्डल शुभ है, कितना सब पुरुषार्थ में सफल हो रहे हैं। तो जो भी ऐसी बातें हों वो यहाँ छोड़के जाना।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 6

अवचेतन मन

-ब्र.कु. शोभिका, शांतिवन।

खुशी के लिए सद्भावनापूर्ण मानवीय संबंध आवश्यक

सद्भावनापूर्ण मानवीय संबंध भी काफी हद तक हमारी खुशी के लिए उत्तरदायी होते हैं और इन संबंधों का आधार प्रेम है। अगर व्यक्ति के पास प्रेम न हो तो वह बीमार हो जाता है और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ने लग जाता है। प्रेम में दूसरे व्यक्ति में मौजूद दैवी अंश के लिए समझ, सद्भावना और सम्मान शामिल है। आप जितना ज़्यादा प्रेम और सद्भावना प्रवाहित करेंगे, उतना ही ज़्यादा आपके पास लौटकर आएगा। अगर आप किसी के अहं को चकनाचूर कर देते हैं और उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाते हैं, तो आप उसकी सद्भावना नहीं पा सकते। हर व्यक्ति चाहता है कि उससे प्रेम किया जाए और उसकी प्रशंसा की जाए। हर व्यक्ति को दुनिया में महत्वपूर्ण समझने की ज़रूरत है। एहसास रखें कि सामने वाला व्यक्ति अपने सच्चे महत्व के बारे में सजग है। आपकी ही तरह वह भी महसूस करता है कि सभी लोगों में मौजूद जीवन-सिद्धांत की अभिव्यक्ति के कारण उसकी गरिमा है। जब आप इसे सचेतन रूप में करते हैं तो आप सामने वाले को सशक्त करते हैं और वह आपके प्रेम तथा सद्भावना को लौटाता है।

दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो मुश्किल, ऐंठे हुए और मानसिक रूप से विकृत होते हैं। वे गलत तरीके से कंडीशन्ड होते हैं। कई मानसिक अपराधी हैं, जो विवादशील, असहयोगी, झगड़ालू, दोषदर्शी और जीवन पर बदनुमा दाग बन चुके हैं। वे मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार हैं। उनके मस्तिष्क विकृत और बेडौल हो गए हैं, शायद अतीत में मिले अनुभवों के कारण। अगर ऐसे किसी व्यक्ति से आपका सामना हो तो आप क्या करेंगे? एक उपाय है कि आप उनकी नकारात्मक ऊर्जा को नापसंदगी के रूप में उन्हीं की ओर लौटा दें। लेकिन ऐसा करने के लिए आपको पहले उनकी नकारात्मकता को अपने भीतर उतारना होगा और सारे बुरे प्रभावों को ग्रहण करना होगा। इसके बजाय ''बुराई के बदले भलाई'' देने की कोशिश करें। इससे एक ढ़ाल बनती है जो उनके मुश्किल और अप्रिय नज़रियों का आप पर प्रभाव नहीं पड़ने देती। आपकी करुणा और समझ के भाव उनके बदलने की प्रक्रिया को भी गतिमान कर देंगे।

स्वयं को तथा सर्व को क्षमा करके खुशी प्राप्त करें

जीवन आपको हमेशा क्षमा करता है। जीवन-सिद्धांत में क्षमा का असीमित खज़ाना है। जब आप अपनी उँगली काट लेते हैं, तो यह आपको क्षमा कर देता है और आपके भीतर की अवचेतन बुद्धिमता तत्काल इसकी मरम्मत के लिए सक्रिय हो जाती है। जीवन आपके खिलाफ कोई बैर नहीं रखता है, यह आपको सेहत, स्फूर्ति, सद्भाव और शांति देता रहता है, बशर्ते आप प्रकृति के साथ सामंजस्य में सोचकर सहयोग करें। नकारात्मक, आहत करने वाली यादें, कटुता और दुर्भावना आपके भीतर के जीवन-सिद्धांत के मुक्त प्रवाह को रोक देती हैं। दूसरों को क्षमा करना मानसिक शांति और अच्छी सेहत के लिए अनिवार्य है। अगर आप अच्छी सेहत और खुशी चाहते हैं, तो आपको हर उस व्यक्ति को क्षमा करना चाहिए, जिसने आपको चोट पहुँचाई है। अपने विचारों को दैवी नियमों और व्यवस्था के सामंजस्य में लाकर खुद को क्षमा करें।

व्यक्ति के पास प्रेम न हो तो वह बीमार हो जाता है और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ने लग जाता है। आप जितना ज़्यादा प्रेम और सद्भावना प्रवाहित करेंगे, उतना ही ज़्यादा आपके पास लौटकर आएगा।

मुंबई-कोलाबा। राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताने के बाद प्रसिद्ध क्रिकेटर विराट कोहली के साथ ब्र.कु. गायत्री।

आप खुद को तब तक पूरी तरह क्षमा नहीं कर सकते, जब तक कि दूसरों को क्षमा न कर दें। खुद को क्षमा न करना अहंकार या अज्ञान है। आज की मनोदैहिक चिकित्सा में इस बात पर लगातार ज़ोर दिया जा रहा है कि द्वेष, दूसरों की आलोचना, पश्चाताप और शत्रुता कई रोगों के कारण हैं, जिनमें ऑर्थ्राइटिस से लेकर हृदय रोग तक शामिल हैं। इन नकारात्मक भावनाओं से उत्पन्न तनाव सीधे शरीर के प्रतिरोधक तंत्र को प्रभावित करता है, जिससे आप संक्रमण और रोग के शिकार हो जाते हैं। तनाव संबंधी विकारों के विशेषज्ञ बताते हैं कि दुर्व्यवहार के शिकार, धोखा खा चुके या आहत लोग अक्सर प्रतिक्रिया करते हुए द्वेष और नफरत पाल लेते हैं। यह प्रतिक्रिया उनके अवचेतन मन में गहरा घाव उत्पन्न कर देती है, जो लगातार टीस मारता रहता है। सिर्फ एक ही इलाज है। उन्हें अपनी चोट को काटकर हटाना होगा और इसका एकमात्र अचूक तरीका है - क्षमा।

क्षमा की कला में अनिवार्य तत्व क्षमा करने की इच्छा होना है। अगर आप सच्चे दिल से किसी को क्षमा करने की इच्छा करते हैं तो आपने आधी बाधा पार कर ली है। आप क्षमा करते समय दरअसल उदार नहीं, बल्कि स्वार्थी होते हैं क्योंकि आप दूसरों के लिए जो कामना करते हैं, वास्तव में वह अपने लिए कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि आप ही इसे सोचते और महसूस करते हैं। जैसा आप सोचते और महसूस करते हैं, वैसे ही आप बन जाते हैं। क्षमा करने की एक सरल लेकिन कारगर विधि है। इसका अभ्यास करने पर यह आपके जीवन में चमत्कार कर देगी। अपने दिमाग को शांत कर लें, शिथिल हो जाएं और मुक्त रहें। ईश्वर के बारे में, अपने प्रति उसके प्रेम के बारे में सोचें और फिर सकारात्मक घोषणा करें:-

''मैं पूरी तरह से ..... (आहत करने वाले का नाम सोचें) को क्षमा करता हूँ जिसने मुझे कभी आहत किया है और मैं हर एक के लिए सेहत, खुशी, शांति तथा जीवन की सभी नियामतों की कामना करता हूँ। मैं यह काम मुक्तता, खुशी और प्रेम से करता हूँ। जब भी मेरे मन में अपने को आहत करने वालों के बारे में विचार आता है, तो मैं कहता हूँ, ''मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है और जीवन की सभी नियामतें तुम्हें मिलें।'' सच्ची क्षमा का महान रहस्य यह है कि जब आप एक बार व्यक्ति को क्षमा कर दें, तो प्रार्थना को दोहराना अनावश्यक है। जब भी वह व्यक्ति आपके मन में आए या वह खास चोट आपके दिमाग में उभरे, तो उसके प्रति अच्छे विचार व्यक्त करें और कहें, ''तुम्हें शांति मिले।'' जितनी बार विचार मन में आए, उतनी ही बार यह काम करें। आप पाएंगे कि कुछ दिनों के बाद उस व्यक्ति या अनुभव का विचार कम बार आएगा और फिर समाप्त हो जाएगा। जब आप अपने मस्तिष्क के रचनात्मक नियम को समझ लेते हैं, तो आप दूसरे लोगों और परिस्थितियों को दोष देना बंद कर देते हैं कि वे आपके जीवन को बना या बिगाड़ रही हैं। आपको एहसास हो जाता है कि आपके खुद के विचार और भावनाएं ही आपकी किस्मत बनाते हैं। बाहरी चीज़ें कारण नहीं हैं, वे आपके जीवन तथा अनुभवों के कारण या निर्माता नहीं हैं।

वस्सी-पठाना(पंजाब)। शिवरात्रि के शुभ अवसर पर ध्वजारोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में डॉ. गुरचरण सिंह रुपाल, ब्र.कु. साक्षी तथा अन्य।

तपा-पंजाब। शिव जयन्ती महोत्सव पर ध्वजारोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में बी.एस.विर्क,प्रधान,जी.जी.एस.कॉलेज,संघेड़ा। साथ हैं सर्किल संचालिका, भटिण्डा तथा अन्य।

देवबंद-गुज्जरवाड़ा। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् एस.डी.एम. राजेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुरेश। साथ हैं ब्र.कु. सुधा तथा अन्य।

गंडई-राजनंदगाँव। दिव्य जागृति भवन के शिलान्यास पट्टिका का अनावरण करते हुए ब्र.कु. कमला। साथ हैं डॉ. मांडवी,कुलपति, इंदिराकला संगीत विश्व विद्यालय,खैरागढ़ तथा ब्र.कु. पुष्पा।

इचलकरंजी-महा.। महाशिवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'मृत्युलोक से अमरलोक की ओर ले जानेवाले भव्य अमरनाथ मेले' का एक विहंगम दृश्य।

जालोर-राज.। कृषि विस्तार केन्द्र के ज्वाइंट डायरेक्टर वालाराम सोलंकी को आध्यात्मिक 'जीवन दर्शन आर्ट गैलरी' समझाने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजु। साथ हैं रिटायर्ड कृषि अधिकारी बृद्धिचन्द माथुर।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 7

वैदेही विहार-कानपुर(उ.प्र.)। हास्य कलाकार राजू श्रीवास्तव का स्वागत करते हुए ब्र.कु. दुलारी। साथ हैं ब्रह्माकुमारी बहनें।

भंडारा। जेल के कर्मचारियों को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शांता। साथ हैं ब्र.कु. शालू।

धोलाभाटा-अजमेर। ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में थानाधिकारी सावरमल नागौर, ब्र.कु. कल्पना, ब्र.कु. योगिनी तथा अन्य।

रायगढ़-ओडिशा। कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए बालाराम बेहेरा,कमाण्डेंट फोर्थ बटैलियन,सी.आर.पी.एफ.। साथ हैं गोलरचन्द्र दलाई,एसिस्टेंट प्रोजेक्ट डायरेक्टर,डिस्ट्रिक्ट रुरल डेवलपमेंट एजेंसी, ब्र.कु. श्रीमती तथा ब्र.कु. अस्विनी।

भवानी नगर-जयपुर। नवरात्रि के अवसर पर नवदुर्गा की भव्य झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में स्वाई माता सिंह अस्पताल के पूर्व अधीक्षक डॉ. विरेन्द्र सिंह तथा ब्र.कु.भाई बहनें।

लुधियाना। 'नारी सुरक्षा हमारी सुरक्षा' अभियान के तहत यात्रा के दौरान ईशा कालिया,ज्वॉइंट कमिशनर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. कविता, संगीता भंडारी,प्रेसीडेंट,एहसास फाउण्डेशन तथा अन्य।

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

-ब्र.कु.ललित शांतिवन

मैं राजश्री गुप्ता (उम्र 50, सेंधवा) कई वर्षों से अपने जीवन में बीमारियों से बहुत परेशान थी, सारे शरीर में ऐसा दर्द था जो कैंसर के दर्द जैसा महसूस होता था। नसों में सूजन बहुत थी, पूरे शरीर में टॉक्सिन्स था। सारे दिन में लगभग तीन हज़ार बार डकारें आती थीं, यूरिक एसिड बहुत बनता था। एक दिन मैं बहुत निराश थी, सेंटर पर गई तो एक ब्रह्माकुमारी बहन ने मुझे एक सी.डी. देखने को कहा जिसमें स्वर्णिम आहार की जानकारी थी। उसी के दूसरे दिन से मैंने तीन दिन रस पद्धति को अपनाया तो मुझे बहुत आराम लगा। इस पद्धति को मैंने 15 दिन किया और फिर छोड़ दिया। लेकिन अभी फिर जनवरी 2014 से इसे लगातार अपनाए हुए हूँ। अब मैं 75 प्रतिशत तक ठीक हो गई हूँ, डकारे अब लगभग 400 के करीब आती हैं, यूरिक एसिड बनना भी कम हो गया है। माइग्रेन के लिए रोज़ गोली लेती थी, अभी एक भी गोली नहीं लेती हूँ, सर दर्द और घुटनों के दर्द में भी आराम है।

यह पद्धति बहुत अच्छी है जो कि बिना खर्च किए, बिना दवाई-गोली किए बीमारी जड़ से ही ठीक कर देती है। यह पद्धति इतनी अच्छी है कि वर्णन करना मुश्किल है। पहले मेरा वजन 80 किलो था,

ओवर डाइट थी, भूख सहन नहीं कर पाती थी। इस पद्धति को अपनाने से अभी वजन 80 किलो से घटकर 63 किलो हो गया है। पहले मैं चल भी नहीं पाती थी, अभी मैं चल लेती हूँ। पहले मैं बहुत निराश रहती थी। सभी प्रकार के इलाज के बाद भी कोई फायदा नहीं हो रहा था। अभी मैं बहुत संतुष्ट हूँ, खुश हूँ। मैं ललित भाई जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ और प्राकृतिक इलाज को सही बतलाते हुए सिस्टमेटिक तरीके से इलाज का जो तरीका उन्होंने बताया, उसके लिए मैं उनकी बहुत-बहुत आभारी हूँ।

मैंने यह स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाने की सलाह कई लोगों को दी है जिनमें से 3 बहनों ने अपने जीवन में इस पद्धति की शुरुआत कर दी है।स्वर्णिम आहार पद्धति से मुझे नया जीवन मिला। मैं यह पुस्तक सदैव पढ़ती रहती हूँ और बांटती भी रहती हूँ। स्वर्णिम आहार पद्धति को मैं जीवन भर अपनाऊँगी। बाबा का, भाईजी का, सभी का बहुत-बहुत थैंक्स। अब मैं अपने जीवन से बहुत-बहुत खुश हूँ।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

प्रश्नः- मेरी निर्भरता आपके ऊपर थी माना कि मैं हर चीज़ के लिए आपके ऊपर निर्भर थी तो फिर मेरा सारा फोकस आपके ऊपर था।

उत्तरः- क्योंकि हमारी अवेयरनेस बाहर थी। दूसरी चीज़ जो बहुत बड़ा लिकेज बनती है हमारी खुशी के लिए वो है 'हमारी दूसरों से अपेक्षा'। क्योंकि हमने लोगों से बहुत सारी अपेक्षायें बनाकर रखी हैं। जब लोग हमारी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते हैं तो हमारी खुशी का इंडेक्स जो है वो नीचे चला जाता है।

मान लो आज बस समय पर नहीं आयी, मेरी अपेक्षा थी कि बस रोज़ सुबह आठ बजे आती है, तो आनी चाहिए। जैसे ही वो समय पर नहीं आयी तो मेरा खुशी का इंडेक्स एकदम से गिर जाता है। इसी तरह से हम चेक करें कि हमने जीवन में किन-किन लोगों से एक्सपेक्टेशन बनाये हुए हैं तो आप पायेंगे कि हमने हर एक से और अपने संबंधों में भी लोगों से अपेक्षाएं बनाई हुई हैं।

प्रश्नः- अपेक्षा का मतलब क्या होता है?

उत्तरः- अपेक्षा का मतलब दूसरे के द्वारा भविष्य में किये जाने वाले व्यवहार को पहले बता देना कि मैं विश्वास करती हूँ कि आप ऐसा करेंगे। आप क्या करने वाले हैं उसका मैं पहले से ही अनुमान लगा लेती हूँ।

प्रश्नः- जब कुछ गलत होता है तो हम यही कहते हैं कि हमें आपसे ये उम्मीद नहीं थी।

उत्तरः- सही है। यह चिन्हित करने वाली बात है। आपको खुद भी नहीं पता....।

प्रश्नः- मैंने तो आपके व्यवहार का पहले से ही अनुमान लगा लिया था। और जब आपका व्यवहार वैसा नहीं हुआ, मैंने जो आपसे अपेक्षा बनाकर रखी थी तो मैं कहती हूँ कि आप मेरी उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे। हमें अपने-आप से तार्किक रूप से ये पूछना पड़ेगा कि यह आइडिया कितना अच्छा है! अब प्रश्न उठता है कि 'मैं कौन हूँ'?

उत्तरः- 'मैं कौन हूँ' यह तो स्वयं एक प्रश्न है, फिर भी लोग कहते हैं कि क्यों पेरेंट बच्चे से उम्मीद न करें, पति-पत्नी एक-दूसरे से उम्मीद न करें, टीचर अपने स्टूडेंट से उम्मीद न करें, ये एक ऐसी चीज़ है जिसे छोड़ना बहुत ही कठिन है।

ब्र.कु. शिवानी

प्रश्नः- वास्तव में हमें वो तब तक पता नहीं चल पाता जब तक कि वो हमारी अपेक्षाओं में फेल नहीं हो जाता।

उत्तरः- अब सारे दिन में हमें ये देखना है कि हमारी अपेक्षा का आधार क्या है। आप जिस तरह से बोलते आये हैं मेरे साथ कल भी इसी तरह से बात करेंगे। लेकिन कल आपने एक अलग तरीके से बात की जो कि मेरी आशा के एकदम विपरीत थी। अतीत के साथ उसकी तुलना करना कि पहले ये जैसे बात करते आये थे अब भी वैसा ही करेंगे। यह मैं पहले से ही दूसरे के लिए निर्णय ले लेती हूँ और फिर जब वो वैसा नहीं करते हैं तो मैं हीन भावना से ग्रसित हो जाती हूँ। अब हम दो बातों में फंसते हैं- एक तो औरों से अपेक्षा करना और दूसरा, दूसरों की उम्मीदों को पूरा करना। ये दोनों चीज़ें हमारी खुशी को बहुत ज़्यादा प्रभावित करती हैं।

प्रश्नः- बच्चे कितनी बार कहते हैं, पेरेंट्स कितनी बार बोल रहे होते हैं कि मुझसे क्या चाहिए या आप मुझसे क्या उम्मीद करते हैं?

उत्तरः- इन दोनों उदाहरणों में क्या है? यदि आप मेरी अपेक्षा को पूरा करते हैं तो मैं खुश रहूंगी, यदि मैं आपकी उम्मीदों को पूरा करती हूँ तो क्या आप खुश होंगे? इन दोनों चीज़ों में अपेक्षा का खुशी के साथ सीधा संबंध है। हमें ये देखना पड़ेगा कि हमने अपनी खुशी को किन चीज़ों पर निर्भर कर दिया है कि भविष्य में ये क्या करेंगे, कैसे बात करेंगे, कैसे व्यवहार करेंगे, वो मैं पहले आशा करती हूँ और उसके ऊपर अपनी खुशी को निर्भर कर देती हूँ, फिर वो वैसा नहीं करते तो मैं दुःखी हो जाती हूँ।

प्रश्नः- अब हम बिल्कुल उसी धारणा पर आ गये हैं जिस पर हमारा पूरा प्रोसेस खड़ा है। अभी तक आप मुझसे एक तरह से व्यवहार करते हुए आये, एक तरह से बात करते हुए आये। अगर आप मुझसे अलग तरह से बात करोगे तो यह नैचुरल है कि मुझे इससे दुःख पहुंचेगा।

उत्तरः- नैचुरल है कि दुःख पहुंचेगा क्योंकि आपने मेरे व्यवहार को देखकर अपना बिलीफ सिस्टम बदल लिया। ये बहुत मुश्किल हो जाता है कि हम भविष्य के व्यवहार पर अपनी खुशी को निर्भर कर देते हैं तो वो खुशी कैसे स्थायी रहेगी? वो तो एक भविष्य की कल्पना है जिसे हम भविष्य से संबंधित कह सकते हैं। अगर हमारी वो कल्पना सही नहीं निकली तो मेरी खुशी गई। और फिर मैं उसका ब्लेम किस पर डाल देती हूँ - आप पर, क्योंकि आपने मेरी अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। मैंने अपेक्षा पहले क्रियेट क्यों किया? -क्रमशः

नवी मुंबई-वाशी। उत्पादन शुल्क मंत्री गणेश नाईक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शीला।

डोंबीवली। गाँव गाँव में प्रभु संदेश देने हेतु वन सेवा प्रोजेक्ट के अंतर्गत उपस्थित हैं दत्त मंदिर के डी.के. दास महाराज, समाजसेवी नंदु पाटील, ब्र.कु. मनिषा तथा अन्य।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 10

जगदम्बा सरस्वती

श्रीमद्भगवद् गीता में कहा गया है कि परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से यज्ञ द्वारा सृष्टि रची। अनेक प्रकार के यज्ञों का उल्लेख करते हुए ये कहा गया है कि सब प्रकार के यज्ञों में से ज्ञान-यज्ञ श्रेष्ठ है। नि:संदेह श्रेष्ठ अर्थात् सतयुगी दैवी सृष्टि की रचना के लिए परमात्मा ने ज्ञान-यज्ञ की ही स्थापना की होगी। इसी बात को यों भी कहा जा सकता था कि परमात्मा ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की, परंतु ज्ञान शब्द के साथ यज्ञ शब्द को इसलिए जोड़ा गया क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान सुनने वाले लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की तथा तन-मन-धन आदि की ज्ञान-यज्ञ में आहुतियां देते हैं। यदि आहुतियां न दी जाएं तो ज्ञान को यज्ञ की संज्ञा नहीं दी जा सकती। यज्ञ वो है जिसमें कुछ न कुछ दिया जाता है। इसलिए ज्ञान-यज्ञ शब्द विश्वविद्यालय शब्द से अधिक महत्वपूर्ण है।

सरस्वती का जन्म कैसे हुआ?

यज्ञ के प्रसंग में ये कहा जाता है कि महाभारत में वर्णित द्रोपदी का जन्म भी यज्ञ से हुआ था इसलिए द्रोपदी को यज्ञसैनी भी कहा जाता है। इसी प्रकार विद्या की देवी सरस्वती का जन्म भी यज्ञ से हुआ माना जाता है। सोचने की बात है कि अग्निकुंड वाले यज्ञ से तो किसी मानवीय देहधारी का जन्म हो ही नहीं सकता क्योंकि अग्नि तो शरीर को जला देती है। ज्ञान रूपी अग्नि ऐसी अग्नि है, जो शरीर को भस्म नहीं करती। इससे शरीर का लौकिक जन्म तो नहीं होता परंतु इससे संस्कार और स्वभाव पवित्र हो जाते हैं और उनके शुद्धिकरण करने से नया मानवीय जीवन आरम्भ होता है। उसे मरजीवा जन्म कहा जाता है। इसे अलौकिक अथवा दूसरा जन्म भी कहा जाता है। ब्राह्मणों को भी द्विज इसलिए कहा जाता है (द्विज, जिसका दूसरा जन्म होता है) क्योंकि ज्ञान द्वारा दूसरा जन्म होता है। इसी तरह ही जगदम्बा सरस्वती का भी जन्म हुआ। इसका भाव ये है कि परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञानशाला की स्थापना की। अत: वहां ज्ञान से उनको नया जन्म मिला। शारीरिक रूप से तो पहले ही से वे निर्मल थीं परंतु ज्ञान द्वारा इनका मन, वचन और कर्म निर्मल अथवा कमल समान बना। इसलिए चित्रकार उन्हें कमलपुष्प पर आसीन दिखाते हैं। परंतु आज कोई भी विद्वान ये नहीं बता सकता कि ज्ञान की देवी सरस्वती का जन्म कैसे हुआ और प्रजापिता ब्रह्मा से उनका क्या संबंध है।

ज्ञान-यज्ञ की रचना करने वाले ब्रह्मा ही को यज्ञ-पिता कहा जाता है, जिन्होंने उस ज्ञान से नया जीवन बनाया, उन्हें ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां कहते हैं। इस दृष्टिकोण से सरस्वती भी ब्रह्माकुमारी ही थीं शास्त्रों में भी इसका गायन है।

मन-बुद्धि इत्यादि की बलि देने के कारण काली:-

ज्ञान-यज्ञ में ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने विकारों की आहुतियां डाली थीं और यथाशक्ति अपना तन-मन-धन दिया था। उससे ही वो यज्ञ चलता रहा और उससे अन्य ब्रह्माकुमारियां और ब्रह्माकुमार प्रगट होते रहे। तब वे नए ब्रह्मा-वत्स भी अपनी आहुतियां डालते रहे। तन और धन की आहुति डालना तो फिर भी सहज होता है परंतु मन की आहुति डालना अधिक कठिन होता है क्योंकि मन चंचल है। सरस्वती जी ने अपने मन की भी पूर्ण आहुति दी। उन्होंने अपना सर्वस्व प्रभु-अर्पण किया। मन और बुद्धि पूर्णत: परमात्मा को समर्पित कर दिए। इन दोनों की बलि के कारण वे काली कहलायीं। इस पुरुषार्थ में वे ब्रह्मा वत्सों में से अद्वितीय और अग्रगण्य थीं। इससे उनके मन, बुद्धि का संबंध पूर्णत: परमपिता परमात्मा से जुट गया और उनकी

बुद्धि का मिलान परमपिता से हो गया। इसके फलस्वरूप उन्होंने अपने परिपक्व अनुभवों के द्वारा सभी यज्ञ-वत्सों को मातृवत रूप से ज्ञान की पालना दी। इसलिए वे यज्ञ-माता कहलाईं। सभी नर-नारियों के प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भरा था इसलिए उन्हें जगदम्बा कहा गया, वरना स्थूल रूप में तो कोई भी सारे जगत की अम्बा नहीं होती।

ओम की ध्वनि करने वाली ओम-राधे, ज्ञान-वीणा वादन करने वाली सरस्वती और ज्ञान-लोरी देने वाली माता जगदम्बा:-

सरस्वती नाम पड़ने से पहले उनका नाम राधा था। जब ओम-मंडली नाम से ज्ञान-यज्ञ का प्रारम्भ हुआ तो वहां वे ओम की ध्वनि किया करती थीं। देह से न्यारा होकर वे ईश्वरीय स्मृति में ऐसे मग्न हो जाती थीं, जो उनकी रूहानियत भरी वाणी सुनने वालों को भी देह से न्यारा कर ईश्वरीय प्रेम के भाव से विभोर कर देती थीं। तब उनमें से कुछेक को दिव्य-दृष्टि प्राप्त होती और वे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार भी करते थे तब लोगों ने उन्हें राधा की बजाय ओम राधे का नाम दिया। उन दिनों जब कभी ब्रह्मा बाबा दूसरे नगर में चले जाते तो वहां से ज्ञान के पत्र लिखकर ओम राधे के पास भेजते थे तब वे उन पत्रों को ही पढ़कर ज्ञान सुनाया करती थीं। उनकी वे विस्तृत व्याख्या करती थीं। सुनने वालों को ऐसा लगता था कि वे ज्ञान की लोरी दे रही हैं अथवा ज्ञान गीत सुना रही हैं और वे उन्हें माता शब्द से संबोधित करने लगे या मम्मा कहने लगे।

पवित्रता के कारण हंगामा, मातेश्वरी द्वारा योग-तपस्या से सामना:-

सब श्रोता उनके द्वारा सुनाये ज्ञान से इतने प्रभावित होते थे कि उनकी मधुर वाणी सुनने वालों ने प्याज, लहसुन, मांस, मछली, अंडे, शराब, सिगरेट, बीड़ी इत्यादि सब छोड़ दिए थे। इससे तब सिन्ध में काफी हलचल हुई थी। यहां तक कि लोगों ने एक बार पिकेटिंग भी कर दी थी परंतु मातेश्वरी सरस्वती जी ने सभी वत्सों को ऐसा अनुशासित किया था कि पिकेटिंग करने वाले भी प्रभावित हुए और उन्होंने अपना धरना उठा लिया। कुछ विरोधी तत्वों ने न्यायालय में भी अभियोग चला दिया परंतु वहां भी मातेश्वरी जी ने निर्भय, निश्चिंत, नि:स्वार्थ और निर्मल स्थिति के द्वारा सबका सामना किया। उस दौर में विश्व के इतिहास में उनके जैसी आयु वाली कोई और कन्या नहीं होगी, जिसने इस प्रकार की विषम परिस्थिति का सामना किया होगा। परमपिता परमात्मा द्वारा दिए गए ज्ञान में अनेकानेक नवीनताएं होने के कारण जगह-जगह स्वार्थी तत्वों ने उनका घोर विरोध किया और हल्ला-गुल्ला भी किया परंतु मातेश्वरी सरस्वती निश्चिंत, निर्भय और नम्रचित्त बनी रहीं। जिस किसी विरोधी ने उन्हें देख लिया या उनसे थोड़ी बातचीत की वे उनके प्रशंसक बनकर रह गए। इस प्रकार मातेश्वरी जी की स्थिति संसार के आकर्षणों से ऊंचा उठकर शिवबाबा के आकर्षण क्षेत्र में रहती थी। इसलिए उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और रूहानी आकर्षण से भरा था। उनकी वाणी में मधुरता थी और उनके बोल मन को शांत करने वाले तथा मन में शक्ति संचारित करने वाले होते थे।

सदा निर्भय और निश्चिंत:-

मातेश्वरी जी का तपोबल उच्च स्तरीय और अलोप था। जब कभी उनके पास जाना होता था तो ऐसा महसूस होता था कि वे योग की शक्तिशाली स्टेज में स्थित होकर पवित्रता एवं दिव्यता की किरणें प्रकीर्ण कर रही हों। उनका नयन स्थिर, चेहरे पर मुस्कुराहट और मुख-मंडल दिव्य आभा को लिए हुए होता था। वे केवल ज्ञान द्वारा ही जन-जन की सेवा नहीं करती थीं बल्कि अपने तपोबल से और अपनी स्थिति से आत्माओं में बल भरती थीं और अपनी शीतलता से आत्माओं को शीतल कर देती थीं। उनके जीवन में अनेक घटनाएं ऐसी हुईं जो भयावह एवं विकराल रूप धारण किए हुए होती थीं परंतु वे इस विविधता पूर्ण विश्व नाटक में अटल निश्चय होने के कारण सदा निश्चिंत रहती थीं। अन्यश्च, यदि बाबा ने उनको कोई ऐसा कार्य सौंप दिया जिसका उन्हें अनुभव न हो या वो बहुत कठिन हो तब भी उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि मैं इसे कैसे करूंगी? मैं तो इससे अपरिचित हूं? बल्कि उन्होंने सदा जी बाबा -ऐसा कहकर इस जिम्मेवारी को स्वीकार किया और उसे सम्पन्न करके दिखाया।

सैफई-उ.प्र.। माननीय मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निधि तथा ब्र.कु. पूनम।

नांदेड़-वसंतनगर-महा.। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए डी.पी. सावंत,पालकमंत्री व हायर एज्युकेशन मिनिस्टर, आनंद चव्हाण,उपमहापौर, दिलीप बेटमोगरेकर,जिला परिषद अध्यक्ष, ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. स्वाती तथा ब्र.कु. दशरथ।

नवरंगपुर-ओडिशा। जिलापाल श्याम सुन्दर नायक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं ब्र.कु. नमिता।

तरावड़ी-करनाल। सेवाकेन्द्र में आने पर एम.पी. श्रीमती रीटा शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुदेश तथा ब्र.कु. इन्दु।

वांसदा-गुजरात। योगाचार्य रामदेव बाबा को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् अभिवादन करते हुए ब्र.कु. साधना।

कांकेर-छ.ग.। त्रिदिवसीय शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य योग शिविर का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. बाबूलाल, पुलिस अधीक्षक आर.एन.दास, नगर अध्यक्ष पवन कौशिक, डॉ. एल. लालवानी, सिंध समाज, अजय मोटवानी, ब्र.कु. मंजूषा तथा ब्र.कु. रामा।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 11

परमात्म ज्ञान ने आसान की जीवन यात्रा...

परमात्मा का ज्ञान मिलने से सम्बन्धों में मधुरता आई। परिवार वालों का भरोसा और विश्वास मेरे प्रति बढ़ा। जीवन यात्रा में दु:खद घटनायें होने पर आई मुश्किलातों को परमात्म-मदद ने न सिर्फ आसान किया बल्कि मेरा हिम्मत-उत्साह बना रहा। परिवार की छोटी-मोटी बातें सहज ही सुलझने लगीं। ये कहना है बिज़नेसमैन विरेन्द्र सिंह, अहमदाबाद का। वे पाण्डव भवन में पाँच दिवसीय राजयोग तपस्या शिविर में हिस्सा लेने के दौरान ओम शान्ति मीडिया से रूबरू हुए, उसके कुछ अंश:-

मैं बिज़नेस करता हूँ। लेकिन यहाँ आने के पहले बिज़नेस में जो टेस्ट था वो यहाँ आने के बाद कम्प्लीट बदल गया। एक तो मैं तनावमुक्त हो गया, सर पर बोझा लेकर चलता था कि ये करना है, वो करना है, ये मिटिंग है, वो मिटिंग है क्योंकि लैण्ड डेवेलॉपर्स का भी काम है मेरा। और लैण्ड में किसान से लेके बिल्डर तक कोई अच्छा इंसान नहीं है। हर जगह चीटिंग है, हर जगह धोखा है, हर जगह परेशानियाँ हैं, तो बहुत सारे टेन्शन रहते थे, बहुत सारे धोखे मिलने के चान्सेज़ रहते थे। लेकिन बाबा का बनने के बाद एक वर्ष तक तो मुझे कोई ज़्यादा ज्ञान की महसूसता नहीं हुई लेकिन एक वर्ष के बाद मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे मेरा बोझ कम होता जा रहा है और हर काम में सरलता आती जा रही है। छोटे मोटे कुछ संकल्प जो चलते थे वो अपने आप जैसे समाप्त होते जा रहे हैं।

जैसे जैसे समय बीतता गया और करीब छ: महीने से तो मैं इतना रिलैक्स महसूस कर रहा हूँ, इतना आनंद महसूस कर रहा हूँ जैसे कि मेरी बुद्धि बिल्कुल संकल्पों-विकल्पों से रहित हो गई है। जो चाह रहा हूँ वे ही संकल्प आ रहे हैं। मेरे जो भी सामाजिक, पारिवारिक और व्यापारिक संबंध थे वे बड़े ही मधुर होते चले जा रहे हैं।

प्रश्न: आपको ब्रह्माकुमारीज़ में क्या अच्छा लगा जिसे आपने अपने जीवन में आत्मसात किया?

उत्तर: पवित्रता, ये मुझे यूनिक लगा। और कहीं भी ऐसी बात नहीं है। ज्ञान में आने से पहले मैं एक अच्छा शिव भक्त था, रोज़ मंदिर जाकर पूजा करता था। कोई भी तकलीफ आती थी, दु:ख होता था, या कोई भी ऐसी वैसी बात हो जाती थी, तो मैं मंदिर में जाकर रोया करता था। मैं एक क्षत्रिय, राजपूत परिवार से हूँ। राजपूत परिवार में वैसे सबको अभिमान होता है लेकिन मुझमें हमेशा से ही सरलता थी। मैं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में पढ़ता था, आइ.ए.एस., पी.सी.एस. बनने के ख्वाब में था। लेकिन ऐसी घटना घटी कि, जो मुख्य स्तंभ घर का था वो स्तंभ ही गिर गया तो संभालने के लिए मुझे खड़ा होना पड़ा। उसके बाद मैंने प्रताप लीज़िंग एण्ड हार्ड पर्चेज़ कम्पनी थी लखनऊ बेस्ड, उसमें जॉब करना शुरु किया। उन्होंने मुझे डायरेक्टर के पोस्ट पर बॉम्बे भेजा। वहाँ मैंने दो-तीन साल संभाला लेकिन मुझे वो बिज़नेस अच्छा नहीं लगता था। मुझे लगता था इसमें कुछ धोखा जैसा होगा। धीरे-धीरे मैं उसे छोड़ने की कोशिश करने लगा। फिर वहाँ से छोड़ के मैं अहमदाबाद आया।

प्रश्न: परमात्मा इस समय ज्ञान दे रहें है, क्या इस संबंध में बतायेंगें?

उत्तर: ऐसा मुझे पता तो था लेकिन जो फीलिंग आनी शुरु हुई वो लास्ट छ:-सात महीनों से बहुत तेज़ी से हो रही है। मुझे अब ये पक्का विश्वास हो गया है कि यहाँ ईश्वर ही पढ़ाते हैं। ईश्वर ही ऐसी पवित्र शिक्षा दे सकते हैं जो कहीं शास्त्रों में नहीं है, कहीं धर्मों में नहीं है। कहीं मुझे संतुष्टि नहीं मिलती थी, यहाँ आने के बाद संतुष्टि मिली।

प्रश्न: आपने किस मापदंड से जाना कि यहाँ परमात्मा ही पढ़ाते हैं?

उत्तर: मुझे कुछ ऐसे अनुभव हुए कि बाबा को बताके मैंने कुछ कार्य प्रारंभ किए और बड़ी ही सरलता से वो आगे बढ़ते चले गए। ईश्वरीय सेवा के लिए भी कुछ करना चाहता हूँ तो बाबा को बता के करता हूँ और सरलता से वह कार्य आगे बढ़ जाता है। लौकिक-अलौकिक दोनों में ही ऐसी प्राप्ति मैंने अनुभव की है। मेरा आत्मविश्वास का स्तर बहुत बढ़ गया है। मेरा आत्मविश्वास अगर पहले दस प्रतिशत पर था तो आज 90 प्रतिशत पर होगा। ऐसा महसूस होता है।

प्रश्न: क्या आपको लगता है कि ब्रह्माकुमारीज़ का जो पथ है उसी से हमारे आत्मिक शक्तियों का विकास होगा, इनका जो मकसद है कि दुनिया परिवर्तन होगी तो आपको लगता है कि पुन: अपना भारत एक सुंदर संसार कहलायेगा?

उत्तर: अवश्य होगा,परमात्मा ने बोला है तो वो अवश्य होगा और मुझे आभास भी हो रहा है और परिवर्तन होना शुरु भी हो गया है, ऐसी मुझे अनुभूति हो रही है। जितनी हमारी संख्या बढ़ती जा रही है उसी रीति से चेंजेज़ होना भी चालू हो गया है। मुझे लगता है ये सबकुछ धीरे-धीरे होगा, एक झटके में नहीं होगा।

प्रश्न: आपकी पर्सनल लाइफ में ऐसा कोई बदलाव आया जिसे पहले आप छोड़ना या करना चाहते थे और मुश्किल अनुभव होता था?

उत्तर: पवित्रता, मुझे यही कठिन लगता था। और दुनिया को भी यही कठिन लगता है। लेकिन जैसे जैसे समय बीतता गया, मैं ज्ञान की गहराइयों में गया, मुझे ऐसी सरलता मिल रही है कि माया मेरे सामने अड़ गई लेकिन मैंने उसे ऐसा हैंडल किया कि आज वो मुझे देव स्वरूप मानती है, मेरी वाह वाह करती है।

प्रश्न: अभी जैसे कि आपकी धर्मपत्नी भी नहीं रहीं और आपके बच्चे भी हैं तो आप इन सब चीज़ों को कैसे मैनेज करते हैं?

उत्तर: बड़े आराम से, कोई दिक्कत नहीं है, कोई परेशानी नहीं। पहले दिक्कत होती थी, लेकिन बाबा के ज्ञान में आने के बाद एक निश्चिन्तता, एक संतुष्टि जैसी आ गई है तो आराम से हैंडल हो जाता है। बच्चों में थोड़ा खटपट होता भी है तो भी आराम से सुलझ जाता है। वो लोग ज़रूरत समझते हैं तो ही बात करता हूँ मैं। घर में भी बहुत कम बोलता हूँ। मेरे बच्चे बहू सभी हैं लेकिन मुझे बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं अमृतवेले बाबा के कमरे में बैठकर वायब्रेशन दे देता हूँ कि बच्चों को सद्बुद्धि दो, ज्ञान दो, शांति दो।

प्रश्न: आपको अभी कैसा महसूस होता है कि ज्ञान में आने के बाद आपके बिज़नेस में सरलता आ गई, सहजता आ गई?

उत्तर: मेरी बिज़नेस पार्टनर और सभी लोगों के साथ संबंधों में मधुरता आ गई है। मेरे अंदर तो धोखे का भाव रहता ही नहीं है और सामने वाले के भी ऐसे भाव मेरे सामने आते ही समाप्त हो जाते हैं।

सोलापुर-पालम। गृहमंत्री आर.आर. पाटील को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चंद्रकला तथा ब्र.कु. सत्या।

फिरोजपुर कैंट-पंजाब। महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं विधायक सुखलाल सिंह ननू, ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. शक्ति।

हमीरपुर-उ.प्र.। संजय सिंह,थानाध्यक्ष को आध्यात्मिक पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. कुसुम।

चोटीला-गांधीनगर(गुज.)। शिवजयंती महोत्सव में 'बर्फीला अमरनाथ बाबा दर्शन' कार्यक्रम के उद्घाटन के पश्चात् नया सूरज देवाय मंदिर के महंत श्री हरीचरणदासजी बापू, ब्र.कु. भानु, ब्र.कु. वाहु, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. मीरा तथा नाना बा समूह चित्र में।

डिबरूगढ़-असम। तनाव मुक्ति शिविर के बाद पी.एन.प्रसाद, एम.डी., डी.जी.एम तथा अन्य चीफ इंजीनियर्स,बी.सी.पी.एल. ब्र.कु.पीयूष, ब्र.कु.विनीता तथा ब्र.कु. माती समूह चित्र में।

वार्शी-महा.। महाराष्ट्र राज्य के पाणीपुरवठा एवं स्वच्छता मंत्री दिलीपराव सोपल को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् पुष्प भेंट करते हुए ब्र.कु.सोमप्रभा। साथ हैं ब्र.कु.महानंदा व ब्र.कु.संगीता।

अहमदाबाद। इंडिया कॉलोनी में 50 घंटे की योग भट्ठी कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कॉर्पोरेटर लिकायत भाई। साथ हैं बिज़नेसमैन महेशभाई कुशवाहा, ब्र.कु. भानु, ब्र.कु. बाबू, ब्र.कु. विरेन्द्र तथा अन्य।

चान्दपुर-उ.प्र.। एस.डी.एम. राकेश यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साधना।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 12

"मैं" और शख्सियत -ब्र.कु.प्रीति

ईमानदारी का मतलब नकली और झूठा बनने से बचना और सच्चा एवं असली बनना है। अगर घर, दफ्तर और समाज में रिश्तों को बनाने वाली कोई चीज़ है तो वह है - सच्चाई। अपना वचन न निभाना बेईमानी है। ईमानदारी से खुलापन, विश्वसनीयता और साफ बोलने की प्रेरणा आती है। वह अपने और दूसरों के प्रति सम्मान दर्शाती है। ईमानदारी का मतलब ईमानदार होना है न कि ईमानदारी दिखाना। झूठ की रफ्तार भले ही तेज़ हो, मगर सच टिकाऊ होता है। ईमानदारी कंपनी के टाइटल या ब्रोशर में नहीं बल्कि लोगों के चरित्र में पाई जाती है।

एक सेर मक्खन

एक किसान एक बेकर को रोज़ एक सेर मक्खन बेचा करता था। एक दिन बेकर ने यह परखने के लिए कि मक्खन एक सेर है या नहीं, उसे तौला और पाया कि मक्खन कम था। इस बात से वह गुस्सा हो गया और किसान को अदालत में ले गया। जज ने किसान से पूछा कि उसने तौलने के लिए किस बाट का इस्तेमाल किया था? किसान ने जवाब दिया, "हुज़ूर, मैं तो अज्ञानी हूँ। मेरे पास तौलने के लिए कोई सही बाट नहीं है, लेकिन मेरे पास एक तराज़ू है।" जज ने उससे पूछा कि फिर वह कैसे मक्खन तौलता है? किसान ने जवाब दिया, "इसने मक्खन तो मुझसे अब खरीदना शुरू किया, मैं तो बहुत पहले से इससे एक सेर ब्रेड खरीद रहा हूँ। रोज़ सुबह जब ब्रेड लेकर आता है तो मैं बाट बनाकर बराबर का मक्खन तौल कर देता हूँ। अगर इसमें किसी का दोष है तो वह है बेकर का।" ज़िंदगी में हमें वही वापस मिलता है जो हम दूसरों को देते हैं। हम जब भी कोई काम करें तो खुद से यह सवाल पूछें - क्या मुझे जो पैसा मिलता है, मैं उसके बराबर की मेहनत भी कर रहा हूँ। ईमानदारी और बेईमानी एक आदत बन जाती है। कुछ लोग बेईमानी की प्रैक्टिस करते हैं और चेहरे पर ज़रा भी शिकन लाए बिना बड़ी आसानी से झूठ बोल सकते हैं। ऐसे लोग भी हैं, जो इतना झूठ बोलते हैं कि सच क्या है यह भी भूल जाते हैं। मगर वे किसे धोखा दे रहे हैं? किसी और को नहीं बल्कि खुद को।

दिखावे से दूर रहें

मुसीबत में पड़े किसी दोस्त से यह पूछना काफी अखरता है कि, "मेरे लायक कोई काम हो तो बताओ।" ऐसा मदद करने के मकसद से नहीं बल्कि दिखावे के लिए कहा जाता है। अगर हम सचमुच मदद करना चाहते हैं तो करने लायक कोई उचित काम सोचिये और कीजिये। बहुत से लोग अपने स्वार्थ को छिपाने के लिए इंसानियत का नकाब लगा लेते हैं, ताकि जब भी उन्हें तकलीफ हो, तो वे बदले में हक जताते हुए सहायता माँग सकें।

ईमानदारी बनाए रखें

प्राचीन ज्ञान कहता है, "ऐसी कोई चीज़ जो बेची और खरीदी जाए वह तब तक मूल्यवान नहीं होती, जब तक उसमें एक न बिक सकने वाला अनमोल राज़ छिपा नहीं होता।" वह अनमोल खूबी जो हर उत्पाद में होती है वह है उसके बनाने वाले की विश्वसनीयता, ईमानदारी और उसकी प्रतिष्ठा।

विनम्र बनें

विनम्रता के बिना आत्मविश्वास अहंकार बन जाता है। विनम्रता सारी खूबियों की बुनियाद है। यह आदमी की महानता को दर्शाती है। विनम्रता का अर्थ अपनी प्रतिष्ठा घटाकर कद छोटा करना नहीं है। सच्ची विनम्रता लोगों को आकर्षित करती है, लेकिन बनावटी विनम्रता दूसरों को हमसे परे धकेलती है। बहुत साल पहले एक घुड़सवार ने कुछ सैनिकों को देखा जो एक लकड़ी का गट्ठा उठाने की असफल कोशिश कर रहे थे। उस समय उनका नायक भी वहीं खड़ा था। घुड़सवार ने नायक से पूछा कि वह उनकी मदद क्यों नहीं करता। नायक ने जवाब दिया, "मैं इनका नायक हूँ और मेरा काम इनको आदेश देना है।" घुड़सवार अपने घोड़े से उतरकर उन सैनिकों के पास गया और उसने उस गट्ठे को उठाने में मदद की। घुड़सवार चुपचाप अपने घोड़े पर सवार हो गया और उस नायक से बोला, "अगली बार जब तुम्हारे आदमियों को सहायता की ज़रूरत पड़े तो अपने कमांडर-इन-चीफ को बुलवा लेना।" जब वह घुड़सवार चला गया तो नायक और सिपाहियों को पता चला कि वह घुड़सवार और कोई नहीं बल्कि जॉर्ज वॉशिंगटन थे। संदेश बिल्कुल साफ है। सफलता और विनम्रता हाथ में हाथ डाले चलती है। जब दूसरे हमारी प्रशंसा करते हैं तो आवाज़ बहुत दूर तक जाती है। सादगी और विनम्रता महानता की दो निशानियां हैं।

विनम्रता के बिना आत्मविश्वास अहंकार बन जाता है। विनम्रता सारी खूबियों की बुनियाद है। यह आदमी की महानता को दर्शाती है। विनम्रता का अर्थ अपनी प्रतिष्ठा घटाकर कद छोटा करना नहीं है। विनम्रता लोगों को आकर्षित करती है।

दूसरों को समझने और ख्याल रखने वाला बनें

रिश्ते निभाने में हम सभी से गलतियां होती हैं, कभी-कभी हम दूसरों की ज़रूरतों के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं, खासकर उनके प्रति जो हमारे बहुत करीबी हैं। फिर इससे मायूसी और नाराज़गी पैदा होती है। मायूसी से बचने के लिए अपनी समझदारी ज़रूरी है। आपसी रिश्ते लोगों में पूर्णता होने की वजह से नहीं बनते बल्कि आपसी समझदारी से बनते हैं। एक अच्छा इंसान बनने से ज़्यादा संतोष दूसरों का ख्याल रखने में मिलता है। इससे हमारी ख्याति अपने आप ही बढ़ जाती है जो हमारे जीवन का सबसे बेहतर बीमा है, और जिसके लिए कुछ खास खर्च नहीं करना पड़ता है। कुछ लोग समझदारी दिखाने और ख्याल रखने की कमी को पैसों से पूरा करने की कोशिश करते हैं। दूसरों को समझना उन पर पैसे खर्च करने से ज़्यादा महत्वपूर्ण है और अगर हम चाहते हैं कि दूसरे समझें तो इसका सबसे अच्छा तरीका यही है कि हम दूसरों को समझें। किसी के साथ संवाद कायम करने के लिए उसे समझना ज़रूरी है।

उदार बनें

उदारता भावनात्मक परिपक्वता की पहचान है। उदार होने का मतलब है कि हम बिना किसी के कहे औरों का ख्याल रखें और उनके लिए सोचे-विचारें। उदार लोगों को ज़िंदगी जैसी नियामतें देती है, स्वार्थी लोग उसकी उम्मीद सपने में भी नहीं कर सकते।

व्यवहारकुशल बनें व दयालुता

किसी भी रिश्ते में व्यवहारकुशलता का भी काफी महत्व है। व्यवहारकुशल होने का मतलब है - किसी व्यक्ति को नाराज़ किए बगैर अपनी बात कह देने की काबिलीयत। पैसे से बहुत महँगा कुत्ता तो खरीदा जा सकता है, मगर वह पूँछ हमारे प्यार और दयालुता की वजह से ही हिलाएगा। दया का भाव जल्दी से जल्दी दिखाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने में कब देर हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। दयालुता एक ऐसी भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और अंधे देख सकते हैं। एक दोस्त के जीवित रहते उसके प्रति दयालुता दिखाना बेहतर है, बजाय इसके कि उसके मरने पर उसकी कब्र पर फूल चढ़ाया जाए। दयालुता की भावना इंसान में अच्छी अनुभूति पैदा करती है, चाहे व्यक्ति इस भावना को किसी और के लिए दिखाए या दूसरे लोग उसके प्रति दिखाएं। मीठी बोली बोलने से जीभ को कोई तकलीफ नहीं होती।

पटना। यूथ एम्पावरमेन्ट एण्ड पॉज़ीटिव थिंकिंग विषय पर एन. एन. एस. के स्टूडेन्ट्स को समझाते हुए ब्र.कु. मृदुल।

पेटलाद-गुज.। कार्यक्रम में शिव ध्वज फहराने के बाद ईश्वरीय स्मृति में एम.एल.ए. निरंजन भाई पटेल, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।

पोखरीपुर-भुवनेश्वर(ओडिशा)। शिवजयन्ती के अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी,प्रधान आचार्य हरिहर क्षेत्र, ब्र.कु. गीता, श्रीमती रेखा गुप्ता तथा अन्य भाई बहनें।

धुँगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। दिव्य प्रकाश भवन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. उषा माउण्ट आबू, ब्र.कु.मनोरमा, कल्चर मिनिस्टर सुभाष पांडे, सभासद अस्विनी कुमार तथा अन्य।

आदमपुर-मण्डी। 'राजयोग शिविर एवं तनावमुक्त जीवन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारंभ करते हुए तरसेम गोयल,गौशाला प्रधान, घीसाराम भाई,जैन सभा प्रधान, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. कविता तथा अन्य।

पालिया-कलां(उ.प्र.)। तहसीलदार हर्ष वर्धन को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं शारदा भाई,वकील, विश्वकर्मा भाई,टीचर।

उमरेड-महा.। आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में उपस्थित हैं फादर संतोष, ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.रामनाथ,माउण्ट आबू, माता भंतेजी तथा ब्र.कु.नाना।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 9

हरदुआगंज-उ.प्र.। शिव जयन्ती के अवसर पर आयोजित कलश यात्रा का शिवध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए डॉ. अरविंद कुमार,वी.सी. नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी तथा अलीगढ़ से सांसद प्रत्याशी। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. सत्यप्रकाश, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

राजनंदगांव-छ.ग.। 'नारी सुरक्षा के लिए आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए पद्मश्री फूलबासन यादव। साथ हैं विधायक तेज कुंवर नेताम, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य।

फलोदी-राज.। रामनवमी के अवसर पर शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए नगरपालिका बिल्डिंग कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश बोहरा, पार्षद पन्नालाल,

माजलगाँव-महा.। महाशिवरात्रि पर्व का रहस्य बताते हुए ब्र.कु.प्रज्ञा। साथ हैं नितिन दादा नाईक नवरे, उपसभापति जयदत्त नरवडे तथा ब्र.कु. अनीता।

महुधा-गुज.। मामलतदार पंकज कुमार लोहाणा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. तृषा।

राजगामार-छ.ग.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् श्रीमती सुनीता सिंह,अधीक्षिका,कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय,सेन्ट्रीपाली, ब्र.कु. जितेश्वरी तथा स्कूल की छात्राएं।

गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र में...?

एक प्रश्न यह भी उठता है कि श्रीमद्भगवद्गीता हम सभी के पास आई कैसे? कहते हैं कि भगवान ने गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र के मैदान में दिया था लेकिन यह ज्ञान हम तक कैसे पहुंचा? यदि इसका पूर्व अवलोकन किया जाये तो हम पायेंगे की जब वेद व्यास जी ध्यान मग्न स्थिति में बैठे थे तब उन्हें कुछ दिव्य साक्षात्कार हुए, जिसमें परमात्मा ने उन्हें बहुत सुन्दर रहस्यपूर्ण ज्ञान स्पष्ट किया। जब वो ध्यानमग्न स्थिति से वापस आए तो इस ज्ञान को उन्होंने लिपिबद्ध करना चाहा तब कुछ बातें भूलना स्वाभाविक ही था क्योंकि साक्षात्कार एक ऐसी चीज़ है जो सम्पूर्ण रीति से मनुष्य को याद नहीं रहती है। इसलिए कहा जाता है कि पहले दिन का ज्ञान उन्हें जो दिव्य अनुभव द्वारा प्राप्त हुआ था वो आज दिन तक कहीं भी लिखा हुआ नहीं है, जो कि धीरे-धीरे विलुप्त हो गया।

दूसरे दिन वेद व्यास जी को यह तो मालूम ही था कि साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त ज्ञान अधूरा है। इसलिए वे पुन: ध्यानमग्न स्थिति में बैठे। जैसे ही वे साक्षात्कार में गए तो जहाँ पर पहले दिन समाप्त हुआ था वहाँ से आगे ज्ञान मिलना प्रारंभ हुआ। इस बार वो कलम कागज लेकर बैठे थे कि आज मैं इसे लिख लूँगा। यह अमूल्य ज्ञान जो हमें प्राप्त हो रहा है इसे मानव तक पहुंचाऊंगा। परंतु दूसरे दिन के ज्ञान में भी वही बातें हुईं, जब वो लिखने जाते थे तो देखना रह जाता था, कभी-कभी देखने में इतना मग्न हो जाते थे कि लिखना ही रह जाता था। इसलिये दूसरे दिन का ज्ञान भी हम तक नहीं पहुंच पाया और वो भी लुप्त हो गया। तब कहा जाता है कि तीसरे दिन वेद व्यास जी ने भगवान से प्रार्थना की कि हे प्रभू! आप मुझे जो इतना अमूल्य ज्ञान दे रहे हैं, इस ज्ञान को मैं मनुष्य तक पहुंचा ही नहीं सका तो इसका फायदा क्या? कोई मुझे इसे लिखने वाला दो जिससे मैं इसको अन्य तक पहुंचा सकूं। तब कहा जाता है कि तीसरे दिन उन्हें श्रीगणेश जी प्राप्त हुए। गणेश जी लिखने के लिए तैयार हुए लेकिन गणेश जी ने एक शर्त रखी कि मैं तीव्रगति से लिखूंगा और जहाँ पर भी तुम रुके, वहाँ से मै उठकर चला जाऊँगा। वेद व्यास जी ने विचार किया कि मैं निरंतर साक्षात्कार की बातों का वर्णन करता रहूँगा और इस प्रकार यह सारा ज्ञान हम सभी के सम्मुख आ जाएगा। जैसे ही वे ध्यानमग्न होकर बैठे और साक्षात्कार में गए तो उन दृश्यों को देख उन्होंने हुबहू वर्णन करना प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि तीसरे दिन की गीता रहस्यमय थी, उसमें कुछ दृश्य ऐसे भी थे, जहाँ उन्हें रुकना पड़ता था। अब स्थिति ऐसी थी कि उसको समझना भी पड़ता था। लेकिन स्मृति में यह बात स्पष्ट थी कि अगर मैं रुका तो गणेश जी उठकर चले जायेंगे। इसलिए जो चीज़ जैसी है, वैसी ही उसके स्वरुप में लिखा दिया जाए। इस तरह से उन्होंने जो दृश्य जैसे देखे वैसे ही लिखाना प्रारम्भ कर दिया। लेकिन कई स्थान पर कई अर्थ, गुह्य रहस्य के रूप में रह गए। इस तरह से श्रीमद्भगवद्गीता का जिन्होंने भी अनुवाद किया है, उन्होंने अपनी-अपनी बुद्धि से उसको समझने का प्रयत्न किया। इस तरह से कई प्रकार के अनुवाद हमारे सामने आते हैं।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

सामाजिक सशक्तिकरण पेज 1 का शेष...

सत्र में विज्ञान एवं इंजीनियरिंग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.मोहन सिंघल ने संस्था के इतिहास व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। प्रितपाल सिंह पन्नु ने इस अवसर पर कहा कि सुरक्षा, सम्मान और समता संसार से लुप्त होती जा रही है। पूरी दुनिया में प्रकाश फैलाने के दावे किये जाते हैं लेकिन अभी तक आम आदमी की झोपड़ी में अंधेरा छाया हुआ है। इस स्थिति को बदलने में कलाकार महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अन्य वक्ताओं ने कहा कि इस बात का फैसला कलाकारों को करना है कि उनकी प्राथमिकता स्वर्णिम संसार का निर्माण करने में है या फिर विध्वंस फैलाने में है। कला का उद्देश्य मनोरंजन तक सीमित न होकर जीवन को संस्कार युक्त बनाना एवं सुख-शांति का प्रसार करना होना चाहिए।

ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि जीवन में व्याप्त विकारों पर विजय प्राप्त कर श्रेष्ठता हासिल की जा सकती है। कलाकार दैवीय संस्कृति के निर्माण में सहभागी बनें। उन्होंने स्पष्ट किया कि ब्रह्माकुमारी संस्था का उद्देश्य धर्म परिवर्तन नहीं बल्कि संस्कारों का परिवर्तन करना है।

ब्र.कु.मृत्युंजय ने कहा कि सकारात्मक लेखन व चिंतन से समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। ब्र.कु. डॉ.निर्मला ने कहा कि धनोपार्जन से भौतिक सुख तो मिल सकते हैं लेकिन आत्मिक सुख व शांति की प्राप्ति नहीं होगी। मन की शांति ही अक्षुण्ण सम्पत्ति है जो विकट परिस्थितियों में भी हमारे काम आती है। ज्ञानसरोवर में पहली बार आये फिल्मी हस्तियों रेखा राव व संदीप गुप्ता ने कहा कि यहां पांव रखते ही यह अहसास हो गया कि इसी स्थान से पूरे विश्व में पावनता व शांति के संदेश प्रवाहित होते हैं। उन्होंने कहा कि अच्छे कर्म करने से परमात्मा की अनुभूति स्वयमेव होने लगती है। यदि कलाकार आध्यात्मिकता से जुड़ जायें और मेडिटेशन को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बना लें तो स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का जो लक्ष्य ब्रह्माकुमारीज़ ने निर्धारित किया है, उसकी प्राप्ति आसान हो जायेगी। स्वागत व उद्घाटन सत्र की शुरुआत मधुरवाणी ग्रुप के स्वागत गान तथा दिल्ली, पुणे व ओडिशा से आए कलाकारों के नृत्यों से हुई। आयोजकों की ओर से कला व संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.कुसुम, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. दयाल व ब्र.कु. सतीश ने देश के विभिन्न प्रान्तों से आए कलाकारों के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि सुप्रसिद्ध गायिका एस.जानकी ने दर्शकों के आग्रह पर ''राम नाम रस पी ले मनवा...'' भजन गायन द्वारा वातावरण को भावविभोर कर दिया। वहीं दिनेश पटेल ने फिल्मी दुनिया के दिवंगत कलाकारों की स्मृति में एक मिनट का मौन धारण करवाने के बाद ''ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछुड़े चमन, तुझपे दिल कुर्बान...'' गीत गाकर अद्भुत माहौल पैदा किया।

गांधीनगर-गुज.। ज्ञानचर्चा करने के बाद डॉ. वरेश सिन्हा,मुख्य सचिव, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. तारा, ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. हरिश,हेड क्वार्टर को-ऑर्डिनेटर,एडमिनिस्ट्रेटिव विंग व ब्र.कु. भरत।

नयमाथी-कर्नाटक। राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए शांतना गौड़ा,एम.एल.ए.,होनाली, पंचायत सदस्य भारती बहन, सुराहोने ग्राम पंचायत अध्यक्ष यशोदा बहन, ब्र.कु.शिवमणि, ब्र.कु.वंदना तथा ब्र.कु.शोभा।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 8

कथा सरिता

जो चाहोगे, वह पाओगे

एक साधु था, वह रोज़ घाट के किनारे बैठ कर चिल्लाया करता था, ''जो चाहोगे सो पाओगे।'' बहुत से लोग वहाँ से गुज़रते थे पर कोई भी उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था और सब उसे एक पागल आदमी समझते थे। एक दिन एक युवक वहाँ से गुज़रा और उसने उस साधु की आवाज़ सुनी, ''जो चाहोगे, सो पाओगे।'' आवाज सुनकर वह साधु के पास गया। उसने साधु से पूछा -''महाराज, आप झूठ बोल रहे हैं, क्या आप मुझे वो दे सकते हैं जो मैं चाहता हूँ?''साधु उसकी बात को सुनकर बोला -''हाँ बेटा तुम जो कुछ भी चाहते हो, मैं उसे ज़रूर दूंगा, बस तुम्हें मेरी बात माननी होगी। लेकिन पहले ये तो बताओ तुम्हें आखिर चाहिए क्या?'' युवक बोला, ''मेरी एक इच्छा है कि मैं हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी बनूं।'' साधु बोला, ''कोई बात नहीं, मैं तुम्हें एक हीरा और एक मोती देता हूँ, उससे तुम जितने भी हीरे-मोती बनाना चाहोगे बना पाओगे।'' और ऐसा कहते हुए साधु ने अपना हाथ आदमी की हथेली पर रखते हुए कहा, ''पुत्र, मैं तुम्हें दुनिया का सबसे अनमोल हीरा दे रहा हूँ, लोग उसे 'समय' कहते हैं, इसे तेज़ी से अपनी मुट्ठी में पकड़ लो और इसे कभी मत गंवाना। तुम इससे जितने चाहो उतने हीरे बना सकते हो।'' युवक अभी कुछ सोच ही रहा था कि साधु उसकी दूसरी हथेली पकड़ते हुए बोला, ''पुत्र इसे पकड़ो, यह दुनिया का सबसे कीमती मोती है, लोग इसे 'धैर्य' कहते हैं। जब कभी समय देने के बावजूद परिणाम ना मिले तो इस कीमती मोती को धारण कर लेना। याद रखना, जिसके पास यह मोती है, वह दुनिया में कुछ भी प्राप्त कर सकता है।'' युवक गम्भीरता से साधु की बातों पर विचार करता है और निश्चय करता है कि आज से वह कभी अपना समय बर्बाद नहीं करेगा और हमेशा धैर्य से काम लेगा। और ऐसा सोचकर वह हीरों के एक बहुत बड़े व्यापारी के यहाँ काम शुरू करता है और अपनी मेहनत और ईमानदारी के बल पर एक दिन खुद भी हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी बनता है। '' 'समय और धैर्य' वह दो हीरे-मोती हैं, जिनके बल पर हम बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अत: ज़रूरी है कि हम अपने कीमती समय को बर्बाद ना करें और अपनी मंज़िल तक पहुंचने के लिए धैर्य से काम लें।

ईमानदारी

एक बहुत बड़ी कम्पनी के सी.ई.ओ. जल्द ही रिटायर होने वाले थे। उन्होंने कम्पनी को बहुत ही मेहनत से इस मुकाम पर लाया था, इसलिए वे चाहते थे कि किसी काबिल व्यक्ति को ही अपना उत्तराधिकारी बनाएं। इसके लिए उन्होंने कम्पनी में कार्य करने वाले सभी होनहार युवाओं की एक मीटिंग बुलाई। उन्होंने सभी को एक-एक पौधे का बीज देकर कहा कि -''इस बीज को आप लोग घर ले जाकर एक गमले में रोपें। इसकी देखभाल करें, इसे पानी दें, नियमित धूप दें और एक साल बाद जिसका भी पौधा अच्छा होगा उसे कम्पनी का भावी सी.ई.ओ. नियुक्त किया जायेगा।

सभी कार्यकर्ता इस बात से बहुत खुश हुए। सभी को यकीन था कि वो ही इस प्रतियोगिता में विजयी होंगे। इन्हीं में से एक काबिल युवा लड़की थी भावना। उसने भी बड़ी रुचि से इस प्रतियोगिता में भाग लिया। आफिस से वापिस जाते हुए उसने एक प्यारा सा गमला खरीदा और घर में जाकर उस बीज को उस गमले में रोप दिया। उसने अपने पापा को भी सारी बात बताई। पर उन्होंने भावना को सलाह दी कि इस बीज की देखरेख करते हुए अपने ऑफिस के कार्य में भी मन लगाकर ध्यान दे। अपने ऑफिस के कार्य को भी लगन से करे। कुछ दिन बीत गये। भावना रोज़ गमले में पानी देती, उसका पूरा ध्यान रखती पर उसमें से कुछ भी निकलता ही नहीं था। धीरे-धीरे एक महीना बीत गया। पर वो बीज अंकुरित नहीं हुआ। भावना बहुत उदास हो गई, पर वह अपने ऑफिस के कार्य में मन लगाये हुए थी। छ: महीने बाद भावना की शादी हुई तो वह अपने नये घर में गमला भी लेकर गई। समय बीतता गया पर गमले में कुछ भी नहीं उगा। भावना को रोज़ गमले में पानी देता देख उसके पति ने भी सवाल किया आखिर ये क्या है? तब भावना ने उन्हें सब कुछ बताया तो उसके पति ने भी उन्हें परेशान न होने की सलाह दी।

आखिर वह दिन भी आ गया जब सभी को कम्पनी में अपना-अपना पौधा लेकर जाना था। भावना परेशान होकर अपने पति से कहने लगी कि वो इस खाली गमले के साथ कम्पनी नहीं जा सकती, ऐसे तो सबके आगे बहुत बेइज्जती होगी। लेकिन उसके पति ने समझाया कि उसे ईमानदारी से अपना खाली गमला लेकर जाना चाहिए और सच्चाई का सामना करना चाहिए। भावना अपना खाली गमला लेकर कम्पनी गई। सभी उसके गमले को देखकर मज़ाक उड़ाने लगे क्योंकि बाकी सभी के गमले सुंदर-सुंदर पौधों से भरे हुए थे। सी.ई.ओ. आए तो उन्होंने सभी के हरे-भरे सुंदर पौधों से युक्त गमले देखे और कहा कि मुझे गर्व है कि आप सभी ने बीज की पालना कर एक साल में बहुत सुंदर पौधे तैयार कर लिए। पर जैसे ही उनकी नज़र भावना के गमले पर पड़ी तो उन्होंने पूछा कि आखिर आपका गमला खाली क्यों है? भावना ने उन्हें सब सच-सच बताया कि उन्होंने बीज की बहुत संभाल की लेकिन वह अंकुरित ही नहीं हुआ। सी.ई.ओ. ने भावना को छोड़कर सभी को बैठने को कहा। और एनाउंस किया कि ''आज से आप सभी की नई सी.ई.ओ. भावना है।'' सभी हैरान हो गये। ''आखिर ये सी.ई.ओ. कैसे बन सकती हैं? इनका तो पौधा उगा ही नहीं,''- सभी ने एक स्वर में सवाल उठाये।

तब सी.ई.ओ. ने कहा कि ''दरअसल, एक साल पहले मैंने आप सभी को जो बीज दिए थे वे उबले हुए थे, उनमें जान ही नहीं थी। उनमें से पौधा उगाया ही नहीं जा सकता था। केवल भावना ने ही सच्चाई से जो स्थिति थी उसे हम सभी के सामने रखा लेकिन आप सभी ने बीज ना अंकुरित होने पर धोखे से अच्छे-अच्छे पौधे वाले गमले लेकर मुझे दिखाने आ गये। भावना ने ईमानदारी व सच्चाई से कार्य किया इसलिए यही सी.ई.ओ. पद की असली हकदार है।

निंदा करने की प्रवृत्ति

एक बार किसी विदेशी नागरिक को अपराधी समझकर राजा ने फांसी की सज़ा का हुक्म सुनाया। यह सुनकर उस विदेशी व्यक्ति ने राजा को अपशब्द कहते हुए उसके विनाश कि कामना की। राजा ने अपने मंत्री से, जो कई भाषाओं का जानकार था, पूछा- यह क्या कह रहा है? मंत्री ने विदेशी के अपशब्द सुन लिये थे, किंतु उसने कहा- महाराज! यह आपको दुआयें देते हुए कह रहा है- आप हज़ार साल तक जियें। राजा यह सुनकर बहुत खुश हुआ। तभी उस मंत्री से ईर्ष्या रखने वाले एक अन्य मंत्री ने आपत्ति उठाई और बोला- महाराज! यह आपको दुआ नहीं, बल्कि आपके विनाश की कामना कर रहा है। उसने पहले मंत्री की निंदा करते हुए कहा-ये मंत्री जिन्हें आप अपना विश्वासपात्र समझते हैं, असत्य बोल रहे हैं। राजा ने पहले मंत्री से बात कर सत्यता जाननी चाही, तो वह बोला-हाँ महाराज! यह सत्य है कि इस अपराधी ने आपको गालियां दी और मैंने आपसे असत्य कहा। पहले मंत्री की बात सुनकर राजा ने कहा-तुमने इसे बचाने की भावना से अपने राजा से झूठ बोला। मानव धर्म को सर्वोपरि मानकर तुमने राजधर्म को पीछे रखा। मैं तुमसे बेहद खुश हुआ। फिर राजा ने विदेशी की ओर देखकर कहा-मैं तुम्हें मुक्त करता हूं। निर्दोष होने के कारण ही तुम्हें इतना क्रोध आया कि तुमने राजा को अपशब्द कहे और मंत्री महोदय तुमने सच इसलिए कहा क्योंकि तुम पहले मंत्री से ईर्ष्या रखते हो। ऐसे लोग मेरे राज्य में रहने योग्य नहीं। तुम इस राज्य से चले जाओ।

शिक्षा- दूसरों की निंदा करने की प्रवृत्ति से अन्य की हानि होने के साथ-साथ स्वयं को भी नुकसान ही होता है।

नागपुर-महा.। समर कैम्प में आये बच्चों को संबोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पारानी।

कायमगंज-उ.प्र.। पत्रकार गोष्ठी करने के पश्चात् समूह चित्र में दैनिक जागरण के महेश वर्मा, राष्ट्रीय सहारा के सतीश गुप्ता, आज न्यूज़ पेपर के प्रदीप गुप्ता, अमर उजाला के मधु अरोड़ा, स्वतन्त्र भारत नव टाइम्स, डेज़ी न्यूज़, हिन्दुस्तान, शिव सन्देश आदि पेपर के पत्रकार भाई तथा ब्र.कु. मिथलेश।

लाडवा-हरियाणा। 'अलविदा तनाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए प्रदीप गर्ग, एन.के. गुप्ता, सरदार जगमीत सिंह, ब्र.कु. राधा,मुम्बई, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. राधा,कुरुक्षेत्र।

मण्डी-गोविंद गढ़। महिला सम्मान यात्रा का शिव ध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए सुखविन्द्र बहन,एम.सी. तथा ब्र.कु. सरस्वती।

मण्डी-हि.प्र.। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में जेल अधीक्षक एन.आर. भारद्वाज, ब्र.कु. भगवान,माउण्ट आबू, ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. दक्षा, ब्र.कु. जमुना तथा ब्र.कु. नीतू।

नाभा-पंजाब। डी.डी.पी.ओ. विनोद कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ब्रिज तथा ब्र.कु. गुलशन। साथ हैं ब्र.कु. बीना, जीवन शाही भाई, डॉ. सुनीता तथा अन्य।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 5

ऊँची सोच

एक आदमी ने देखा कि एक गरीब लड़का उसकी कीमती कार को बड़े गौर से निहार रहा था। वह फटे कपड़े पहने हुए था। वह गाड़ी को बहुत ही आश्चर्य से दूर से देख रहा था। आदमी ने उस गरीब लड़के को प्यार से बुलाया और कार में बिठा दिया। लड़के ने कहा, ''आपकी कार तो बहुत अच्छी है, बहुत कीमती होगी ना?

आदमी ने कहा, ''हाँ, कीमती है, पर मुझे यह मेरे भाई ने गिफ्ट दी है।

लड़का (कुछ सोचते हुए), ''वाह ! आपका भाई कितना अच्छा है। ''

आदमी -'' मुझे पता है, तुम क्या सोच रहे हो, तुम भी ऐसी कार चाहते हो ना?''

लड़का - ''नहीं! मैं आपके भाई की तरह बनना चाहता हूँ।

अपनी सोच सदा ऊँची रखें, दूसरों की अपेक्षाओं से भी कहीं ज्यादा ऊँची।

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 697,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना–ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

प्रभु मिलन की प्यास

मेरा जन्म गांव सांधी, जिला रोहतक (हरियाणा) के एक आर्य समाजी परिवार में हुआ। शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ मेरा झुकाव प्रभु की खोज में भी लगा रहा। मैंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋगवेदादि भाष्य भूमिका तथा विवेकानंद के प्रवचनों के संग्रह तथा गीता आदि अनेक धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया लेकिन संतुष्टि नहीं मिली। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया प्रभु मिलन की प्यास भी बढ़ती गई। 30 साल की उम्र में सन् 1980 में मैं अपने घर में सो रहा था, मुझे एक स्वप्न दिखाई दिया जिसमें एक दिव्य श्वेत वस्त्रधारी वृद्ध पुरुष ऊपर आसमान में बैठा हुआ है और मुझे कह रहा है, आओ बच्चे! मैं नींद से जाग गया और बड़ी उत्सुकता से चारो ओर देखने लगा लेकिन कुछ नज़र नहीं आया। लगभग एक सप्ताह के बाद फिर वही स्वप्न दिखाई दिया और वही दिव्य चेहरा स्पष्ट दिखाई दिया और कानों में वही आवाज़ आई, आओ बच्चे! मैं बड़ा हैरान हुआ। मैं समझ नहीं पा रहा था कि मेरे साथ यह क्या हो रहा है। कुछ दिनों के बाद ब्रह्माकुमारी आश्रम में क्लास करने वाले एक भाई ने कहा आओ आपको ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र दिखाते हैं। जब मैं आश्रम के अन्दर गया तो सामने एक बड़ा चित्र लगा हुआ था। मैं उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गया, ये तो वही व्यक्ति हैं जो मुझे स्वप्न में दो बार दिखाई दिये थे। मैंने एक बहन से पूछा ये कौन हैं? तो बहन से जवाब दिया कि ये हमारे ब्रह्माबाबा हैं। फिर मैंने पूछा कि ये मुझे स्वप्न में आसमान में बैठे हुए दिखाई दिये तथा इन्होंने मुझे कहा, आओ बच्चे! ब्रह्माकुमारी बहन ने मुझे बताया कि हमारे ब्रह्माबाबा परमात्मा शिव के माध्यम हैं तथा वर्तमान समय सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त कर ऊपर सूक्ष्मलोक में विराजमान हैं और ब्रह्माबाबा हमेशा आओ बच्चे या मीठे बच्चे शब्द का प्रयोग करते थे।

मैं यह सोचकर बड़ा हैरान हुआ कि जिस ब्रह्मा को सारा संसार याद करता है वो मुझे याद कर रहा है। मैंने ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को पूर्ण रूप से ग्रहण करने का मन बना लिया। ब्रह्माकुमारी बहन ने मुझे सात दिन का कोर्स कराया। कोर्स के दौरान मैंने अपने आप को देह से अलग ज्योति-बिन्दु आत्मा समझने का अभ्यास किया और जो भी मेरे सामने आता था उसे भी मैंने आत्मा समझने का अभ्यास किया।

साप्ताहिक कोर्स के बाद मैंने योग का अभ्यास शुरु किया तो मुझे परमात्मा के ज्योति स्वरूप का साक्षात्कार हुआ। एक चमकता हुआ सितारा मेरे सामने प्रकट हुआ जिससे रोशनी की किरणें निकल रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे पूरा कमरा प्रकाश से भर गया हो। मैं अशरीरी हो गया, जैसे देह है ही नहीं, मेरी आंखें बंद नहीं हो रही थीं। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कोई शक्ति मुझे अपनी तरफ खींच रही है। मेरे कानों में आवाज़ आई, ''बच्चे मैं तुम्हारा शिव बाबा हूँ''। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा सारा बोझ समाप्त हो गया है, मैं हल्का हो गया हूँ, मेरा मन बिल्कुल शान्त हो गया है। मुझे ऐसा लगा जैसे कि मेरी जन्म-जन्म की प्रभु-मिलन की आश पूरी हो गई हो। अब मैं ब्रह्माकुमारी संस्था में नियमित रूप से ज्ञान व योग की क्लास करते हुए सुख शान्ति सम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।--- राजेन्द्र हुड्डा रोहतक, रिडायर्ड प्रिन्सीपल।

प्रश्न :- अचानक मेरी एकाग्रता नष्ट हो गई है, मन उखड़ा-उखड़ा सा रहता है। न संसार अच्छा लगता है, न ये जीवन जीने की इच्छा होती है, सब कुछ छोड़ दूँ। मुझे सत्मार्ग दिखाइये।

उत्तर :- पूर्व काल की कई निगेटिव बातों का प्रभाव मानव मस्तिष्क में अंकित रहता है, वे अचानक प्रकट हो जाते हैं। यही कारण है कि कई लोग अचानक ही हिंसक हो उठते हैं, कई भावुकतावश कोई भयंकर गलती कर लेते हैं। आपके मस्तिष्क में भी कुछ इसी तरह का अंकित है। आप परेशान न हों, आपको अपने चित्त को पुन: स्थिर करना है। मैं कुछ राय लिख रहा हूँ, आप 15 दिन दृढ़ता पूर्वक अभ्यास करें।

जब भी आप सवेरे उठें, उठते ही श्रेष्ठ विचार करें। जैसे - "मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ.. मैं सर्वशक्तिवान का बच्चा हूँ.. उसने ही मुझे ये सुन्दर जीवन दिया है.. मुझे संसार के लिए कुछ महान कार्य करने हैं... मेरे साथ स्वयं भगवान है.. उसने मुझे वरदान दिया है कि सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है.. ये जीवन प्रभु सौगात है.. मुझे इसे सजाकर रखना है।" ये विचार आपमें नई शक्ति भरेंगे और आप स्थिर चित्त हो जायेंगे।

अपनी नींद व भोजन को संतुलित करें। 15 दिन तक टी.वी. देखना छोड़ दें व प्रतिदिन 25 बार ये अभ्यास करें कि मैं सर्वशक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।

प्रश्न :- यद्यपि मैंने ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा कर ली है, तो भी ये काम मुझे कठिन लग रहा है। मैं एक कुमार हूँ। मैंने एक बार भगवान का हाथ पकड़ा है सो छोड़ूँगा नहीं। परन्तु मुझे मदद चाहिये।

उत्तर :- ब्रह्मचर्य सबसे बड़ी तपस्या है। और यह राजयोग की तपस्या का आधार भी है। यह आजकल कठिन इसलिए है कि अन्न भी तामसिक है व चारों ओर निगेटिविटी है। काम-वासना की तो मानो आँधी चल रही है, युवक तो इसे ही जीवन मानते हैं, उन्हें पता ही नहीं कि जीवन में तो इससे परे भी बहुत कुछ है। आप महान हैं जो आपने परमात्म-श्रीमत पर पवित्रता को अपनाया है। याद रहे कुछ लाख लोगों की ये महान पवित्रता हमारे देश को सबसे महान बनायेगी।

योगाभ्यास पर आप ध्यान दें। राजयोग से आंतरिक ऊर्जा उर्ध्वगामी होकर सूक्ष्म शक्ति का रूप ले लेती है, इससे ब्रह्मचर्य सहज हो जाता है। साथ-ही-साथ मनन चिन्तन में भी इस शक्ति का यूज़ होता है। शारीरिक परिश्रम में भी यह शक्ति लगती है। कुमारों को तीनों ही करने चाहिए। आलसी व ठण्डा नहीं होना चाहिए। आसन व प्राणायाम भी करने चाहिए।

रामनगर-जम्मू कश्मिर। थाना प्रभारी सेवा सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मला।

आपका योग का चार्ट 4 घण्टा होना ही चाहिए। इसमें स्वमान, अशरीरीपन, रूहरिहान व योग सब शामिल हो। भोजन खाने से पूर्व भोजन को दृष्टि देते हुए आप 7 बार अभ्यास करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। दूध को दृष्टि देते हुए 21 बार यही अभ्यास करके दूध पियें। इससे कर्मेन्द्रियाँ शीतल हो जायेंगी व ब्रह्मचर्य की तपस्या परम आनंद में बदल जायेगी।

प्रश्न :- मैं एक कुमार हूँ। मुझे बचपन से ही देह के आकर्षण की समस्या है। इससे मेरा योग भी नहीं लगता। मेरी ओर भी बहुत लोग आकर्षित होते हैं। मैं पूर्ण डिटैच होने के लिए क्या करूँ?

उत्तर :- आपको 2 बातों की साधना अच्छी तरह करनी होगी। प्रथम - मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ... आप अपने चमकते हुए ज्योति स्वरूप को देखें। दूसरी - सभी की भृकुटी में चमकती हुई आत्मा देखना। ये दोनों अभ्यास 3 मास तक प्रतिदिन 10 बार करें। साथ-ही-साथ अपनी पवित्रता को दृढ़ व नैचुरल बनाने के लिए इन 5 संकल्पों को फीलिंग में लायें –1. मैंने स्व-इच्छा से व परमात्म-इच्छा से ये पवित्रता का मार्ग चुना है, अब यही मेरा जीवन है... 2. मैंने एक बार गन्दगी का मार्ग छोड़ दिया, थूक दिया, अब थूक कर पुन: चाटना नहीं है.. 3. जिस मार्ग पर एक बार कदम रख दिया, अब पीछे मुड़कर नहीं देखना है... 4. मैंने पवित्रता का वचन भगवान को दे दिया है .. वचन देकर तोड़ना नहीं है... 5. अब मुझे अपवित्रता के मार्ग पर जाना ही नहीं है तो उसका चिन्तन क्यों करूं..

इस तरह के संकल्प पवित्रता को अति शक्तिशाली बना देंगे।

प्रश्न :- मैं 20 वर्षीय कुमारी हूँ। 5 वर्ष से बाबा की बनी हूँ। परन्तु अब घरवाले शादी के लिए अति आग्रह कर रहे हैं। मेरी इच्छा नहीं है। मैं तो बाबा के काम आना चाहती हूँ। किसी मनुष्य के नहीं, क्या करूं?

उत्तर :- क्योंकि पवित्रता की आज्ञा स्वयं भगवान ने दी है तो इसके लिए वह स्वयं मदद भी करता है, बशर्ते कि हमारे मन में दृढ़ संकल्प हो। यदि हमारे मन में ही दुविधा है कि पता नहीं चल पाऊंगी या नहीं, न चल पाई तो.. तब परमात्म मदद नहीं मिलेगी। छोटी आयु में मनुष्य के विचार भी उतने परिपक्व नहीं होते।इसका निर्णय आपको ही करना होगा क्योंकि यह आपके जीवन का निर्णय है। ताकि यदि भविष्य में आपको कठिनाई हो तो आप स्वयं उसका सामना कर सको।

आप तीन मास तक यह अभ्यास करें कि मैं परम पूज्य आत्मा हूँ या मैं इष्ट देवी हूँ। इससे परिस्थिति बदल जायेगी। यह आपका श्रेष्ठ भाग्य होगा कि आप शिव-शक्ति बनकर भगवान के कार्य में लग जायें– यह मौका एक बार ही मिलता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 4

अंत:करण को न्यायालय बनायें

- ब्र. कु.मोनिका, शांतिवन।

चुनाव के एक उम्मीदवार से लोगों ने पूछा: ''आप तो वर्षों से फलाने पक्ष को निष्ठावान व सभ्य समझते थे। अचानक पक्ष बदल कर दूसरे पक्ष में कैसे जुड़ गये?''

उम्मीदवार ने मधुर मुस्कान देते हुए कहा: ''मेरी अंतरात्मा की आवाज़ के अनुसार ही मैंने पक्ष बदला है।''

''लेकिन आपकी अंतरात्मा ने आपको क्या कहकर निर्देश दिया, यह तो बताइए'' लोगों ने प्रश्न किया।

''यही कि 'तिल में तेल न हो' तो उससे क्या आश रखना। मेरी अंतरात्मा ने कहा कि 'चल उड़ जा रे पंछी कि अब ये देश हुआ बेगाना।' अपन (बंदा) तो है अंतरात्मा का अनुकरण करने वाला आदमी! यह कहकर उम्मीदवारी बदल दी।

'अंतरात्मा की आवाज़' – कितना पवित्र शब्द! मनुष्यों में कुदरत द्वारा स्थापित एक निष्कपट चौकीदार! जो कि 'जागृत रहो' का नाद कर मनुष्य को जगाने की कोशिश करता है। मनुष्य अंतरात्मा की आवाज़ सुनता तो है, लेकिन उसका उपयोग और अर्थघटन अपनी रीति से करता है। कोर्ट में गवाही देनी हो तो मनुष्य की अंतरात्मा उसे झूठ नहीं बोलने का निर्देश देती है। लेकिन मनुष्य अंतरात्मा को कहता है ''मैं सत्य बोलूंगा, लेकिन मेरे अनुसार ही सत्य बोलूंगा। मुझे जो कहना चाहिए वो नहीं, लेकिन मेरे फायदे में जो कहना चाहिए वही कहूंगा। इसलिए हे मेरी अंतरात्मा! तुझे चुप रहना है!'' 'अंतरात्मा की आवाज़' इस शब्द को ही मनुष्य ने बेरहमी से कुचल दिया है।

'अंतरात्मा की आवाज़' – कितना पवित्र शब्द! मनुष्यों में कुदरत द्वारा स्थापित एक निष्कपट चौकीदार! जो कि 'जागृत रहो' का नाद कर मनुष्य को जगाने की कोशिश करता है। मनुष्य अंतरात्मा की आवाज़ सुनता तो है, लेकिन उसका उपयोग और अर्थघटन अपनी रीति से करता है। कोर्ट में गवाही देनी हो तो मनुष्य की अंतरात्मा उसे झूठ नहीं बोलने का निर्देश देती है। लेकिन मनुष्य अंतरात्मा को कहता है ''मैं सत्य बोलूंगा, लेकिन मेरे अनुसार ही सत्य बोलूंगा। मुझे जो कहना चाहिए वो नहीं, लेकिन मेरे फायदे में जो कहना चाहिए वही कहूंगा। इसलिए हे मेरी अंतरात्मा! तुझे चुप रहना है!''

'आत्मा की आवाज़' या 'अंत:करण' के नाद के साथ मनुष्य कुटिलतापूर्वक खेल खेलता आया है। वास्तव में 'अंतरात्मा की शुद्ध आवाज़' में ही सबसे बड़ा फायदा है जो न्याय को अंदर से तोलने के बाद सदाचार और सत्य आचरण के लिए मनुष्य को प्रोत्साहित करता है। स्वतंत्रता कहती है, जो भाता है वही करो, लेकिन अंत:करण कहता है कि जो योग्य है वही करो। मनोवेग मनुष्य को मन के वश होकर कार्य करने को प्रेरित करता है किंतु अंत:करण आत्मा को परमात्मा का संदेश ध्यान में रखने का निर्देश देता है। आज राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा तथा विज्ञान के क्षेत्र में क्यों इतने प्रश्न उठ खड़े होते हैं? इसका जवाब एक प्रसिद्ध चिंतक ने दिया है। उनके मतानुसार मनुष्य की आत्मा ही राजनीति है, वही अर्थशास्त्र है, वही शिक्षा है और वही विज्ञान। इसलिए मनुष्य को आवश्यकता है अपनी अंतरात्मा को सुसंस्कृत बनाने की। यदि अंतरात्मा को सुसंस्कृत बना दिया जाये तो राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान के प्रश्नों का अपने आप ही निराकरण हो जाएगा।

जितने हद तक मनुष्य का अंत:करण परिशुद्ध, उतने ही हद तक जीवन पवित्र। आजकल भ्रष्टाचार, प्रपंच, वैरवृत्ति आदि का बोलबाला देखने को मिलता है, ये मनुष्यों द्वारा अंतरात्मा को स्वयं का गुलाम बनाने की द्रव्यवृत्ति का ही परिणाम है।

विलियम मोर्बे के शब्दों में जानें तो:

कायरता पूछती है– काम में कोई जोखिम तो नहीं है न?

स्वार्थ पूछता है– क्या ये कार्य फायदेमंद है?

अहंकार पूछता है– क्या ये काम लोकप्रिय हो सकता है?

लेकिन अंत:करण पूछता है– क्या ये कार्य न्यायसंगत है?

इसलिए कहते हैं कि वो मनुष्य अंधा है जो खुद के अंत:करण को देख नहीं सकता और वो मनुष्य लंगड़ा है जो कि सत्यपथ को छोड़कर भटकता रहता है। आज के मनुष्यों के कान भी धीरे-धीरे सत्यप्रूफ बनते जा रहे है!

एक पुस्तक में लिखा है कि ''एक डाकू साधु के वेश में लोगों को लूटा करता था। एक दिन व्यापारियों का एक काफिला उस डाकू के अड्डे की ओर से गुज़र रहा था। व्यापारियों का काफिला देख डाकुओं को लगा कि घर बैठे लक्ष्मी टीका लगाने आई है। उन डाकुओं ने संगठित रूप से व्यापारियों को चारो तरफ से घेर लिया। लेकिन एक व्यापारी वहां से भागने में सफल हो गया। वो वहां से भागकर एक गुफा में प्रवेश कर गया।

गुफा में पहुंचकर उसने देखा कि एक साधु आँखें बंद कर माला फेर रहा है। उस व्यापारी ने गुफा में बैठे साधु से शरण मांगी और डाकुओं से अपनी धन की रक्षा के लिए उसने सोने की मुहरों की पुड़िया उस साधु को सौंपी। साधु ने कहा: आप ये मुहरों की थैली बाजू के कोने में छोड़ दें और निर्भय हो जायें। साधु को थैली सौंपकर व्यापारी जंगल में छिप गया।''

दूसरे व्यापारियों का सब माल लूटने के बाद डाकू चले गये। ये देख व्यापारी भी जंगल से बाहर निकलकर, साधु को दी हुई मुहरों की थैली लेने गुफा में पहुंचा। वहाँ उसने जो दृश्य देखा, उसे देख व्यापारी स्तब्ध रह गया। वो साधुबाबा तो डाकुओं की टोली का सरदार था और लूटे हुए धन का हिस्सा साथी डाकुओं को बांट रहा था। ये देख व्यापारी की बुद्धि कुंठित हो गई।

डर के कारण व्यापारी भागने का प्रयत्न करने लगा। इतने में साधु वेशधारी डाकु सरदार की नज़र उस व्यापारी पर पड़ी। उसने व्यापारी को आवाज़ देकर कहा: ''आप अंदर आकर अपनी मुहरों की थैली ले लीजिए।'' व्यापारी कांपते-थर्राते गुफा के अंदर गया। उसने देखा कि उसने मुहरों की थैली जहां रखी थी, वो वहीं पड़ी थी। व्यापारी अपनी थैली लेकर बाहर निकल गया।

डाकुओं ने अपने साधुवेशधारी सरदार से पूछा: ''हाथ में आया धन आपने व्यापारी को क्यों सौंप दिया?'' साधु वेशधारी सरदार ने कहा: ''वो व्यापारी मुझे भगवान समान मानकर, मोह-माया से मुक्त मानकर, मुझपे भरोसा रखकर, अपने धन की रक्षा के लिए अपनी मुहरों की थैली मेरे पास रखकर गया था। भगवान के प्रति आस्था रखने वाले मेरे साधुवेश पर उसे पूर्ण विश्वास था। इसलिए मैंने भी अपना कर्तव्य निभाने के लिए अंतरात्मा से प्रेरित होकर साधुवेश की प्रतिष्ठा बचाई है। मैंने व्यापारी के विश्वास की रक्षा की है, ना कि उसके धन की!''

यह है अंतरात्मा की आवाज़। सुनना चाहें तो मनुष्य भी सुन सकते हैं, साधु भी सुन सकते हैं और शैतान भी। एक विशेष वक्तव्य में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने आचार्य महाप्रज्ञ से कहा था कि आज़ादी के बाद देश में अनेक कारखानों का विकास हुआ है, लेकिन मनुष्य को मनुष्य बनाने का एक भी कारखाना विकसित नहीं हुआ!

बात तो सच है। ऐसा कारखाना जहां सच्चे मानव का निर्माण हो सके, जहां मनुष्य के चरित्र का निर्माण हो सके तथा जहां उन्हें प्रमाणिकता व नैतिकता के ढांचे में ढ़ाला जा सके, ऐसे कारखाने का आज तक निर्माण नहीं हो सका। यह भी सत्य है कि बाह्य प्रयत्नों से ऐसा कारखाना खुल भी नहीं सकता। मनुष्य को स्वयं के अंत:करण के द्वारा ही खुद के भीतर ऐसा कारखाना खोलना होगा। अंत:करण को पावन बनाने के सात उपाय कौन से हैं?

1. मनुष्य रूप में मिले जीवन को वरदान व गौरव समझें। 2. अंत:करण को मोह-माया, वासना-आसक्ति आदि दूषणों से जहां तक हो सके वहां तक मुक्त रखें। 3. दैनिक जीवन में आचरण को प्रत्येक क्षण पवित्रता की कसौटी पर चेक करते रहें। कामचोरी, हरामखोरी, रिश्वतखोरी को जीवन से सदा के लिए निकाल बाहर करें। 4. जब सत्य और स्वार्थ में से किसी एक को चुनना हो तो सत्य को मजबूती के साथ पकड़ कर रखें। 5. विवेक को अपना मित्र बनाकर आत्म-जागृति के साथ चलने का दृढ़ संकल्प लें। 6. अंत:करण की आवाज़ को समझें, उसका खून न करें। 7. प्रत्येक कार्य शुद्धभाव से करें। अंत:करण को न्यायालय तुल्य मानें।

कल्याण वेस्ट(महा.)। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए प्रोफेसर सीमा पवार, डॉ. शशि सिंग, ब्र.कु. अल्का, नगरसेविका बहन, पंडित जी, जान्वटी पोटे तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। सेवाकेन्द्र की रजत जयन्ती स्मारिका का विमोचन करते हुए राजेन्द्र शुक्ल,खनिज ऊर्जा एवं जनसम्पर्क मंत्री, डॉ. सज्जन सिंह,समाजसेवी, राहुल गौतम,जिला पंचायत उपाध्यक्ष, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

बलोतरा-राज.। राजपुरोहित समाज के वेदान्त आचार्य श्री श्री ध्यानारामजी महाराज को विद्यालय के परिचय के साथ साहित्य भेंट करते हुए डॉ. सविता,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रंजु तथा ब्र.कु. उमा।

राजेन्द्रनगर-बरेली(उ.प्र.)। सी.बी. गंज के सरस्वती शिशु मंदिर में नैतिक मूल्यों पर समझाते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. शरद, स्कूल के प्रधानाचार्य, टीचर्स तथा स्कूली छात्र-छात्राएं।

बारपली-ओडिशा। 78वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती के अवसर पर सागर फूड प्रोडक्ट्स एण्ड पुष्पा स्टोन क्रशर के मालिक हेम सागर साहू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममिना।

राजसमंद-नाथद्वारा(राज.)। लिंकिंग हार्ट्स दूरिज़म के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं मलिकेश भारद्वाज,डिस्ट्रिक्ट जज, गिरीराज राठी,होटल एसोसिएशन अध्यक्ष, ब्र.कु. रीटा तथा ब्र.कु. पूनम।

OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 1

प्राप्त ज्ञान को बुद्धि द्वारा कृति में लाकर होगी शांति

'प्रभु उपवन' सेवाकेन्द्र के दशाब्दी महोत्सव में शरीक हुए शहर के प्रबुद्धजन।

बोरीवली। कार्यक्रम के उद्घाटन में बैलून छोड़ते हुए ब्र.कु. दिव्यप्रभा, सुभाष घई, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. बृजमोहन। हेमराज हाई स्कूल के प्रांगण में पहुँचे शहर के प्रबुद्ध जन।

बोरीवली- मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संचालित 'प्रभु उपवन' सेवाकेन्द्र के दशाब्दी महोत्सव का भव्य आयोजन सेठ गोपालजी हेमराज हाई स्कूल के विशाल प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि ये समय बदलाव का है जहाँ चारो ओर अशांति के बादल हैं। अब परमात्मा स्वयं इस धरा पर आकर शांति का साम्राज्य स्थापित कर रहे हैं। अब पुन: भारत सोने की चिड़िया कहलायेगा। इसपर प्रकाश डालते हुए, पुराने जगत के जंगल को स्वर्ग जैसा बगीचा बनाने में परमपिता परमात्मा के कर्तव्य का महत्व बताते हुए सभी का मार्गदर्शन किया।

सुभाष घई ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञान द्वारा प्राप्त समझ को बुद्धि द्वारा कृति में लाकर स्वयं के जीवन को सार्थक बनाने का सयानापन जो कर सकते हैं, उन्हीं को ही सच्ची शांति मिल सकती है। ब्र.कु. संतोष ने सभी उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रभु उपवन शहर वासियों के लिए परमात्मा की सौगात है जहाँ हर कोई परमात्म पालना ले जीवन में सुकून प्राप्त कर सकता है। लियांडर पेस,टेनिस स्टार ने कहा कि जय-पराजय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने कहा कि ये रहस्य पुन: स्मृति में लाया जाये कि तनाव को कम करने से ही जीत पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि यहाँ के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा है जो तनाव मुक्त रहने में मदद करती है।ब्र.कु. दिव्यप्रभा ने सभी उपस्थित जनों को अपनी शुभभावनायें दीं। कार्यक्रम का आरंभ इंडियन आईडल के कलाकारों ने अपनी मधुर ध्वनि से पूरे वातावरण को संगीतमय करके किया। सुंदर नृत्य के द्वारा सभी आये हुए मेहमानों का स्वागत किया गया। ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि आज हर इन्सान शांति की चाह में भटक रहा है। राजयोग के द्वारा शांति की प्राप्ति होती है। कार्यक्रम की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए सेवाकेन्द्र की गतिविधियों की झलकियों का विडियो दिखाया गया। संगीत निदेशक समीर सेन, विधायक गोपाल शेट्टी आदि विशिष्ट जनों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

लियांडर पेस,टेनिस स्टार का सम्मान करते हुए ब्र.कु. बिन्दु।

गरीबों की नि:स्वार्थ सेवा ही सच्ची मानवता

अररिया-बिहार। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ब्र.कु.उर्मिला व बैंक कर्मी ब्र.कु. संजय गुप्ता के नेतृत्व में बैद्यनाथपुर के अग्निपीड़ितों को साड़ी, बेडशीट, चावल, साबुन, बच्चों के लिए कपड़े व प्रसाद बाँटे गये एवं परमात्मा का संदेश भी दिया गया। 30 अप्रैल की रात यादव मोहल्ले में लगी आग ने लगभग 200 घरों को स्वाहा कर दिया। गरीब हों या अमीर सभी फुटपाथ पर आ गए थे। घटना के बाद सरकार व समाज की ओर से मदद की सामग्री वितरित कराई गई परन्तु गाँव-वासियों को निराशा ही निराशा थी। बहुतों ने सहायता राशि लेने से भी इन्कार कर दिया। परन्तु ब्रह्माकुमारी बहनों को देखकर लोगों ने शांति से पंक्तिबद्ध होकर सहायता राशि भी ली और ओम शांति का नारा लगाते रहे। इस मौके पर ब्र.कु.उर्मिला ने कहा कि दीन-दुखियों, असहायों की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य का काम है। उन्होंने कहा कि गरीबों, मज़लूमों एवं निराश्रितों की नि:स्वार्थ सेवा ही सच्ची मानवता है। इनके चेहरों की मुस्कान से अपार सुख व शांति प्राप्त होती है। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में फिल्म प्रोड्यूसर एवं अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा के सेक्रेट्री चाँद मिश्रा एवं गाँव निवासी अमीन महादेव यादव और बिल्लू यादव का योगदान सराहनीय रहा। अन्य उपस्थित गण में मुख्य थे शर्मीला गुप्ता, कौशल्या देवी, राजमुनी साह, योगेन्द्र साह, शंभु महतो, अतीश मंडल, खुशबू बहन, प्रीति बहन, ब्र.कु.लाडली, ब्र.कु.किरण, ब्र.कु.दयाल, ब्र.कु.रेजीना एवं ब्र.कु.सिमरन।

अररिया। अग्नि पीड़ितों को सहायता सामग्री प्रदान करते हुए ब्र.कु. उर्मिला बैंक कर्मी ब्र.कु. संजय गुप्ता तथा अन्य।

दृढ़ता ही सफलता की चाबी है: ब्र.कु. विजय

रानियां। दृढ़ता ही सफलता की चाबी है और दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे सारे विघ्न धराशायी हो जाते हैं। मनुष्य के भीतर ही उसका भाग्य छिपा रहता है, दृढ़ इच्छाशक्ति वाले उस छिपे हुए भाग्य को बाहर ले आते हैं। दृढ़ संकल्पों के सामने तूफान भी घुटने टेक देते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आठ दिवसीय 'तनाव मुक्ति एवं मेडिटेशन अनुभूति शिविर' में ब्र.कु. विजय ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि तनावमुक्त व सदा खुश रहने के लिए वर्तमान में जीएं। अपनी तुलना दूसरों से न करें, हमेशा आशावादी दृष्टिकोण को अपनायें। आशावादी लोग प्रतिकूलता में अनुकूलता को खोज लेते हैं। जो लोग निराशावादी होते हैं उन्हें 3 गुणा हार्ट प्रॉब्लम्स अधिक होते हैं। इस शिविर के अंतर्गत अनेक महोत्सव मनाये गये जैसे कि खुशियों का महोत्सव, परिवर्तन महोत्सव, आनंद उत्सव व गुडबाय टेंशन उत्सव आदि। शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। शिविर के उद्घाटन अवसर पर दिलबाग सिंह तंवर, कुलदीप भांभू, सुभाष गोयल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में शहर की मुख्य जज भी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंतिम दिवस पर स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. कमलेश ने आये हुए सभी मेहमानों का आभार व्यक्त किया व साथ-साथ सेवाकेन्द्र पर आने का निमंत्रण भी दिया। ब्र.कु. विजय को शहर के लायन्स क्लब रानियां रॉयल व अनाज मण्डी एसोसिएशन द्वारा सम्मानित किया गया।

रानियां। 'तनाव मुक्ति एवं मेडिटेशन अनुभूति शिविर' को संबोधित करते हुए ब्र.कु. विजय।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,** Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक ₹ 190, तीन वर्ष ₹ 570 , आजीवन ₹ 5000 । **विदेश** -₹ 2500 (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15th May 2014
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।